नया वर्ष

विभिन्न लोगों के लिए क्या-क्या अर्थ रखता है। एक दीवाना अर्थ कोष
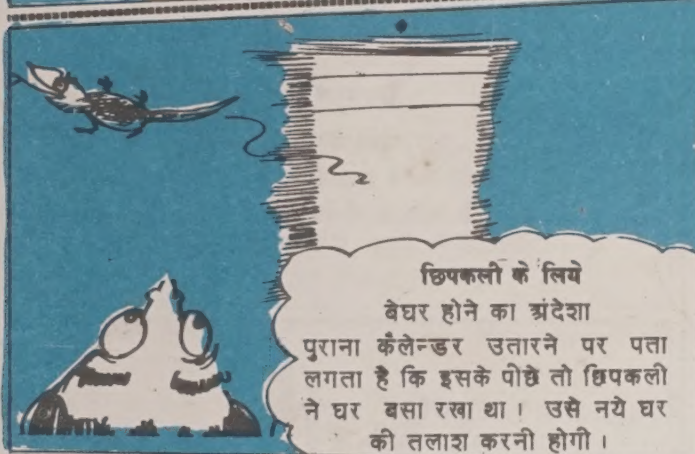
कुत्तों के मालिकों के लिये ।
कमेटी के दफ्तर के चक्कर ।
नया टोकन बनवा लो ।

दफ्तर के बाबुओं के लिये ।
सरदर्द जुकाम
ज्यादा सरदर्द और जुकाम, क्योंकि
नई कैजुअल लीव जो ड्यू हो गई हैं
उसे अवेल करना है ।
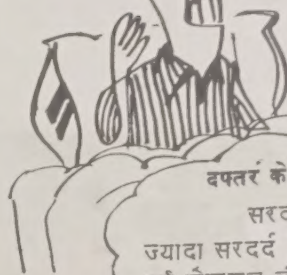
आम व्यक्तियों के लिये ।
१५ रु० की चपत
अपना नये साल का रेडियो लायसेंस
रिन्यू करवा लीजिये ।
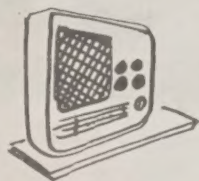
कुछ लोगों के लिये ।
तीसरे विश्व युद्ध की शुरुआत
युद्ध-नये साल के कैलेण्डर को मुफ्त
हथियाने के लिये घोर और भयंकर
दांव-पेच लड़ाने का समय ।

बीबी के लिये
एक नया मौका
यह कहने का कि सिगरेट छोड़ दो ।
नये साल में यही संकल्प कर लो ।

मदिरा प्रेमियों के लिये
न्यू इयर ईव को १२ बजे की इन्त-
जारी में ज्यादा शराब पीने के कारण
सुबह सिरदर्द से फटा जाता है ।

नया धारावाहिक उपन्यास

खौफनाक आवाज

लेखक :– कैप्टन युद्धवीर

भाग-3

ठ रघुनन्दन क्लब में व्हिस्की पीते र आँधी-तूफान में धर्मवीर पाण्डे कार चुराकर ले गया। उनकी पत्नी टियों को वह यह धोखा देकर कार ला कि सेठ जी हास्पिटल में घायल । वीराने में आकर वह रुपया-जेवर चलता बना। सेठ जी अपने दोस्त उनकी कार में घर पहुंचे तो उनके में एक लाश उनका इन्तजार कर । पुलिस ने सेठ जी को ही हत्यारा शुरू किया तो उन्हें मशहूर जासूस का सहारा लेना पड़ा। लाश के केस में से भयानक खिलौने निकले हैरान रह गए।

यदयाल की मौत हुए छब्बीस-सताइस चुके हैं। मौत का कारण अभी मैं सका। न तो बदन पर किसी घाव न है, न चेहरे पर ही जहर का । पोस्ट-मार्टम के दौरान ही पता ा कि मौत कैसे हुई।' पुलिस-डाक्टर

ा मैं भी लाश को एक नजर देख ?' बलजीत ने पूछा।

ों नहीं!'

जीत आगे बढ़ा और लाश पर झुक ह-सात मिनट तक वह लाश को हा। इसके बाद वह सीधा खड़ा हो पुलिस-डाक्टर से बोला, 'लाश के छाती पर चमक-सी है। मृतक ई खास चीज मल कर नहाया ।'

स-डाक्टर ने जवाब देने की बजाए के निर्जीव चेहरे को घूरना शुरू

कर दिया।

बलजीत ने कहा, 'डाक्टर साहब! आपने मृतक की छाती को सूंघ कर नहीं देखा। आपकी यह धारणा गलत है कि जयदयाल की मौत को छब्बीस या अट्ठाइस घंटे बीत चुके हैं।'

'आपकी क्या राय है?' डाक्टर ने हैरानी से पूछा।

'यह लाश कम-से-कम पांच दिन पुरानी है। आप छाती सूंघ कर देखेंगे तो आपको अभी पता चल जाएगा कि लाश सुरक्षित रखने के लिए मसाला लगाया गया है।'

बलजीत की बात सुन कर सभी दंग रह गए। सबसे ज्यादा हैरानी पुलिस-डाक्टर को हुई।

बलजीत ने कहा, 'जयदयाल की लाश को पांच दिन तक किसी खास मनोरथ के लिए सम्भाल कर रखा गया। तब इसे लिबास पहना कर यहां लाया गया और अलमारी में टांग दिया गया।'

इस रहस्य के खुलने पर सभी की आंखें फैल गईं।

पलभर कुछ सोचने के बाद बलजीत ने पूछा, 'क्या मृतक के लिबास की तलाशी ली गई है?'

'जी हां।' एक पुलिस-कर्मचारी ने उत्तर दिया।

'वो चीजें कहां हैं जो इसके लिबास की जेबों से निकाली गईं?'

'इस मेजपर अलग-अलग बंधी पड़ी हैं।'

'क्या कुछ निकला है?'

पुलिस-कर्मचारी ने सारा ब्यौरा दे दिया।

'क्या आप वो दोनों पत्र मुझे दिखा सकते हैं?' बलजीत ने पूछा।

'क्यों नहीं!' यह कह कर पुलिस-कर्मचारी ने मेज पर से वही पोटली उठाई, जिसमें दोनों पत्र बंधे हुए थे। पोटली खोल कर उसने दोनों पत्र बलजीत को दे दिये।

पत्र पढ़ कर बलजीत मुस्कराया और बोला, 'ये दोनों पत्र दो आदमियों ने नहीं लिखे।'

'क्या मतलब?' पुलिस-डाक्टर चौंक उठा।

बलजीत ने कहा, 'मेरा मतलब है, आप अगर यह समझ बैठे हैं कि एक पत्र कातिल ने लिखा और दूसरा मृतक ने, तो आपका यह अनुमान झूठा है।'

'तो सच क्या है?'

'सच यह है कि दोनों पत्र एक ही आदमी के लिखे हुए हैं।'

'अब यह सुन कर सभी चकित रह गए।'

'डाक्टर साहब! यह तो पक्की बात है कि मरने वाले ने ये पत्र नहीं लिखे। हां, कातिल एक कहानी-सी बनाने या पुलिस को धोखा देने के लिए दो पत्र जरूर लिख सकता है।'

'धोखा कैसा?'

'एक पत्र जयदयाल के नाम और एक पत्र जवाब में सत्यदेव के नाम लिखा गया, ताकि पुलिस दो आदमियों के लिखे हुए दो पत्र समझे।'

'आपने तो बड़ी अजीब बात खोल डाली है। इसका मतलब यह हुआ कि इन्स्पेक्टर शर्मा बेकार में ही जयदयाल के बारे में पूछ-ताछ कर रहे होंगे।'

'पता करना जरूरी है, मगर मेरे विचार में बेकार रहेगा।'

'वह कैसे?'

'वह ऐसे कि जयदयाल का यह सही पता नहीं हो सकता। पत्र में जो पता लिखा गया है, वहां जयदयाल नहीं रहता था। मैं तो यहां तक कहूंगा कि पत्र में चाहे मृतक

का नाम जयदयाल लिखा गया है, मगर यह इसका असली नाम नहीं होगा। हमें जान-बूझ कर धोखे में रखने के लिए ही ये नकली नाम, नकली पते और नकली पत्र लिखे गए।'

बलजीत ने इतना ही कहा था कि कदमों की आहट उभरी।

दो क्षण बाद इन्स्पेक्टर शर्मा ने प्रवेश किया। वह बलजीत को वहां मौजूद देखकर खिल उठा। उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा, 'हल्लो बलजीत बाबू! आप और यहां! अचम्भा है मेरे लिए।'

'इन्स्पेक्टर साहब! आदमी से आदमी के मिलाप का बहाना निकल ही आता है।' बलजीत ने हाथ मिलाते हुए कहा।

'क्या जयदयाल अपने लिखे हुए पते पर रहता था?' पुलिस-फोटोग्राफर ने पूछा।

'नहीं।' इन्स्पेक्टर ने जवाब में कहा, 'उस पते पर जयदयाल नामक कोई आदमी नहीं रहता था।'

'ओह! बलजीत बाबू पहले ही हमें बता चुके हैं कि यह पता नकली है। डाक्टर ने कहा, 'इनकी यह भी राय है कि मृतक का नाम भी जयदयाल नहीं है।'

बलजीत को इन्स्पेक्टर शर्मा चकित आँखों से देखने लगा।

पुलिस-फोटोग्राफर बोला, 'बलजीत बाबू ने यह भी कहा है कि यह लाश पांच दिन पुरानी है। इसे गलने-सड़ने से बचाने के लिए कोई मसाला काम में लाया गया है। बलजीत बाबू का कहना है कि लाश को इतने दिन तक कर सम्भाल रखने के पीछे कोई खास भेद है।'

बलजीत ने मुस्कराते हुए कहा, 'हाँ, मैं लाश की जांच करके इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि मरने वाले का नाम जयदयाल नहीं है। इसे दम घोंट कर मारा गया है। अगर इस तरीके से नहीं मारा गया तो बिजली के करेंट से इसे मारा गया है।

इन्स्पेक्टर शर्मा की हैरानी अपनी सीमा पर पहुंच गई। उसने कहा, 'इसका मतलब तो यह हुआ कि बम्बई के पते पर सत्यदेव के यहाँ जाना भी बेकार होगा।'

'मैंने यह नहीं कहा कि छानबीन ही न की जाये।' बलजीत बोला, 'मेरा कहना है कि पहले पत्र पर तारदेव रोड के एक बंगले का पता बोगस है। मेरे विचार में वहां सत्यदेव नामक कोई आदमी नहीं रहता।'

ठीक इसी क्षण दबी-दबी चीख सुनाई दी। सभी चौंक पड़े।

'कपिला...यह कपिला की चीख है।' यह कह कर सेठ रघुनन्दन अपनी बेटियों के बेडरूम की ओर लपके।

बाकी लोग भी उसके पीछे हो लिये।

चपला अपने पलंग पर हैरान बैठी थी। कपिला पलंग के पास मुँह खोले खड़ी थी। पलंग के पास गलीचे पर एक सूटकेस था। उसके पास मर्दाना कपड़े पड़े थे जो सूटकेस में से निकाले गए थे।

'यह...यह सूटकेस हमारा नहीं है।' कपिला ने अपने पिता से कहा जो हांप रहे थे।

इन्स्पेक्टर भी हैरान होकर बोला, 'कपड़ों से तो यह मर्दाना सूटकेस लगता है।'

सेठ रघुनन्दन बोले, 'सूटकेस मेरा भी नहीं है। ये लिबास मेरे नहीं हैं। मैं ऐसे कपड़े नहीं पहनता।' और वह कपिला की ओर घूम कर बोले, 'कपिला! तुम इस तरह क्यों खड़ी हो?'

'डैडी! इस सूटकेस में कपड़ों के नीचे भयानक चीजें पड़ी हैं। मैंने रात का लिबास पहनने के लिए पलंग के नीचे से अपना सूट-केस निकालना चाहा तो मेरा हाथ इस सूट-केस पर जा पड़ा। यह मेरे सूटकेस के ऊपर पड़ा था।' कपिला ने अपनी हैरानी का कारण बताया।

अब बलजीत आगे बढ़ा। उसने सूटकेस में से कपड़े निकाल दिये। इसके बाद एक-एक चीज बाहर निकालने लगा। इन्हीं चीजों को देख कर कपिला की चीख निकल गई थी।

बलजीत ने सबसे पहले कांसे का नेवला निकाला था। उसकी कमर के गिर्द फणधर सांप लिपटा हुआ था। नेवले ने सांप की गर्दन मुँह में ले रखी थी।

इसके बाद सूटकेस में से एक मूर्ति निकली। यह मूर्ति एक बुढ़िया की थी। वास्तव में वह कोई चुड़ैल बुढ़िया थी। उसके माथे में तीसरी आंख बनी हुई थी। बुढ़िया के दाँत इतने लम्बे थे कि राक्षसी की तरह मुँह से बाहर निकले हुए थे। उसके पांव उल्टे थे। एड़ियां आगे को थीं और पंजे पीछे को थे।

बलजीत ने जो तीसरी चीज निकाली, वह भूरी लकड़ी की मूर्ति में एक मर्द और एक औरत दिखाई गई थी। मर्द के हाथ में छुरा था और वह छुरा औरत के नंगे पेट में आधा धंसा हुआ था।

'ये कैसे खिलौने हैं?' इन्स्पेक्टर ने हैरान होकर कहा।

'ये खिलौने नहीं हो सकते।' बलजीत बोला, 'ऐसे भयानक खिलौने कोई नहीं बनाता। खिलौने तो बच्चों का मन बहलाने के लिए होते हैं। ऐसे खिलौनों से बच्चों को दूर ही से डर लगने लगेगा। यहां तक कि इन्हें कोई बेचने के लिए भी तैयार नहीं होगा। इनके पीछे भी कोई गहरा भेद मालूम होता है।'

हर कोई बलजीत की दलील से सहमत था।

बलजीत ने कहा, 'अगर ये खिलौने मृतक ने बनाए थे तो प्रश्न उठता है कि उसने ऐसे-ऐसे खिलौने क्यों बनाए? यह मृतक कौन

शेष पृष्ठ ३८ पर
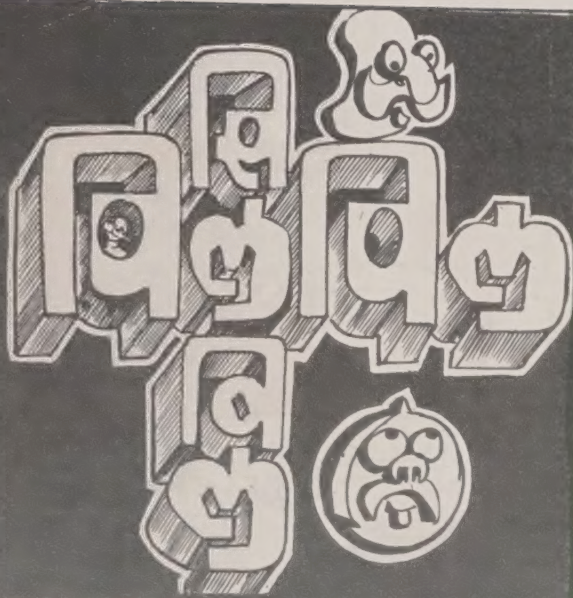
नया साल आने वाला है, खूब मौज-मस्ती मना लो। नया साल साल में एक बार ही आता है। इक बार आता है दिन ऐसा रोज नहीं।
HAPPY NEW YEAR TO US
Psssss
मुझको संभालो कोई मुझको होश नहीं।

नये साल के साथ एक ही समस्या है, बोत देर से आता है। रात को बारह बजे तक जगे रहना मुश्किल हो जाता है। अभी कुल नौ ही बजे हैं।
कोई कसर मत रखो, सुबह जो होगी देखी जायेगी। थमारे जैसे खाते-पीते चौधरी नहींपीयेंगे तो और कौन पीयेगा?
गन्ना अपने ही खेतों में तो होता है जिसकी यह रम बनती है।
बारह बजे तक जगने का एक ही तरीका है, खूब ड्रिंक करो। टाइम कटते देर नहीं लगेगी। मलीट्री का रम-पीने का मजा तो भाई आज की रात ही से...क्या समझे?
हम सराब थोड़े ही पी रहे सैं। हम तो अपने खेत की पैदावार पी रिहे हैं भाई। कर लो थम जो कुछ करना हो म्हारा। बारह बजे का लार्म लगा रखया है हमने घड़ी मां।

नतीजा जैसे कि सबको पता है जो होना है वही होता है...ज्यादा शराब पीने के कारण लगभग ग्यारह बजे ही तीनों लुढ़क जाते हैं। उन्हें कुछ होश नहीं रहता।
HAPPY NEW YEAR

उधर गली में से मशहूर चोर चम्पत लाल सैंधमार गल घोटिया आ निकलता है। खिड़की से झांक कर अन्दर देखता है तो उसे अन्दर का सारा मामला समझ में आ जाता है। शराब की खाली बोतलें बिखरी पड़ी थीं। साफ मतलब था कि नशे में धुत्त होकर तीनों औंधे पड़े हैं। उसके लिये यह सुनहरा मौका था।
चल जा अन्दर में, कोई न मन्दर में चम्पत लाल और दिखा अपने हाथ।

चम्पत लाल खिड़की के रास्ते सरक कर अन्दर घुस जाता है।
वाह ! चारों तरफ शराब की बदबू फैली है। कोई और तो नहीं है मकान में ? लगता तो नहीं।

यह हल्के नशे में तो नहीं हैं ? खटका सुन कर आंख खुल गयीं तो ? पहले देख लेना चाहिये। मैं जोर-जोर से शोले के डायलॉग बोलता हूं। कच्ची नींद में होंगे तो जाग जायेंगे। मैं कह दूंगा नये वर्ष की बधाई देने आया हूँ।

क्यों रे कालिया, यह हैं वह दो फौज्जी जो रामगढ़ की रक्सा के लिए आये हैं ?
हूं हूं हूं ..... हा हा हा हा हा हा-हूं ......

किसी ने करवट तक नहीं बदली। आज शायद मेरी किस्मत का वॉल्टेज ज्यादा ही तेज है। इसी खुशी में मैं भी एक जाम पी लेता हूं। जयप्रकाश जी ने भी कहा है कि थोड़ा पीने में बुराई नहीं है...हं...हं...हं...इनको जरा डंडे मार कर देखूं ? उठते हैं कि नहीं। डंडे से भी होश न आयी तो टैम्पू लेकर आऊंगा और सारा माल फर्नीचर समेत उठा कर ले जाऊंगा।

अरे ? इस पर तो डंडों का भी असर नहीं होता। फ्लेग ब्रांड चावल की बोरी की माफिक है यह तो। पहले मैं कीमती सामान समेट लेता हूं। दूसरे फेरे में टैम्पू में भारी सामान ले जाऊंगा।
BA
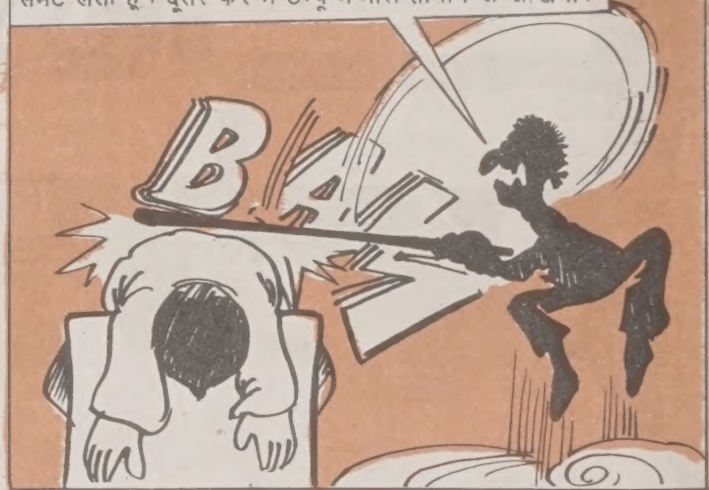
परी से वह तो परी...कैसे कमर मटका कर चलती है वह जो है न !
और कुछ रह तो नहीं गया ? इसकी जेबें भी टटोल ली मैंने, पांच सौ अस्सी रुपये नब्बे पैसे मिले। रेडियो और टेपरिकार्डर संभाल लिया है, ट्रांजिस्टर भी रख दिया। इलेक्ट्रिक केल्कुलेटर भी समेट लिया। जितने स्टील के वर्तन और अच्छे-अच्छे कपड़े थे वह भी रख दिया है। मेरा ख्याल है इस फेरे के लिये यह काफी है। अब टैम्पू लेकर आऊंगा और फ्रिज, आलमारी, सोफा सैट, पलंग, डाइनिंग टेवल, कुर्सियां, पर्दे, सीलिंग फैन, बाल्टियां वगैरह सब ले जाऊंगा। जब इनको होश आयेगा तो पानी पीने के लिये गिलास तक नहीं मिलेगा, हा-हा-हा।
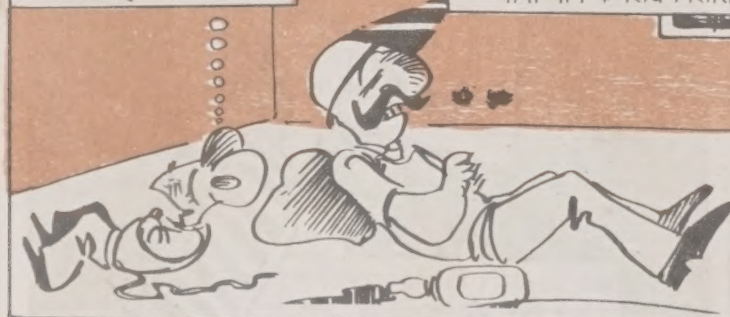
तभी १२ बजे का अलार्म बजा उठता है।
टर्रो

एलार्म क्यों बाजा···सोने दे आड़ी बोत क्या नाम···नींद आ री से···हैं सुबह हो गयी···क्यूं हो गई···अच्छा-अच्छा बोत अच्छा है···बोत अच्छा है···सुबह हो गई वह सुबह कभी तो आयेगी···जरूर आयेगी, जरूर आयेगी थम देखते रेना आधी रात में सबेरा कैसे हो गया···हो गया।

क्या बाजा था इभी-इभी···कुछ बाजा था···हां लार्म बाजा था। क्यूं बाजा था··· लार्म का काम बाजना से हौर वह बाज गया। इब थम बताओ हम क्या कर सकते हैं···बोल्लो···हम क्या कर सकते हैं। लेकिन सवाल से क्यों बाजा म्हारी इजाजत के बगैर ?

मेरे दमाग में धूल सी उड़ रही है। ठीक-ठीक समझ में नीं आ रिया है··· नीं आ रिया है···सवेरा कैसे हो गया··· ये सामने कौन खड़्या से···कौन खड़्या से

कौन से तू ? म्हारी जांजत के बगैर म्हारे···मकान में कैसे घुस गया ? मैं बौत खराब आदमी हूं···मैंने बड़े-बड़े सीधे कर दिये हैं··· तू बोलता क्यों नहीं···चुप्प खड़्या से···सरमाता है ? अपने बड़े भाई से सरमाता है ? ओये देख मैं तेरा बड़ा भाई···हमेशा तुझे मैंने अपना छोटा भाई समझया है···अपने सगे से भी बढ़ कर। हांऽऽऽ तू मुझे क्या सिखाता है ? तू खुश तो है न···मैं तेरे से बोत खुस हूं. बोत खुस···तू मेरा छोटा भाई बोत सीधा आदमी है। पगले दुनिया ठग लेगी तुझे···मैं बोत खुस हूं तेरे से बोत खुस।
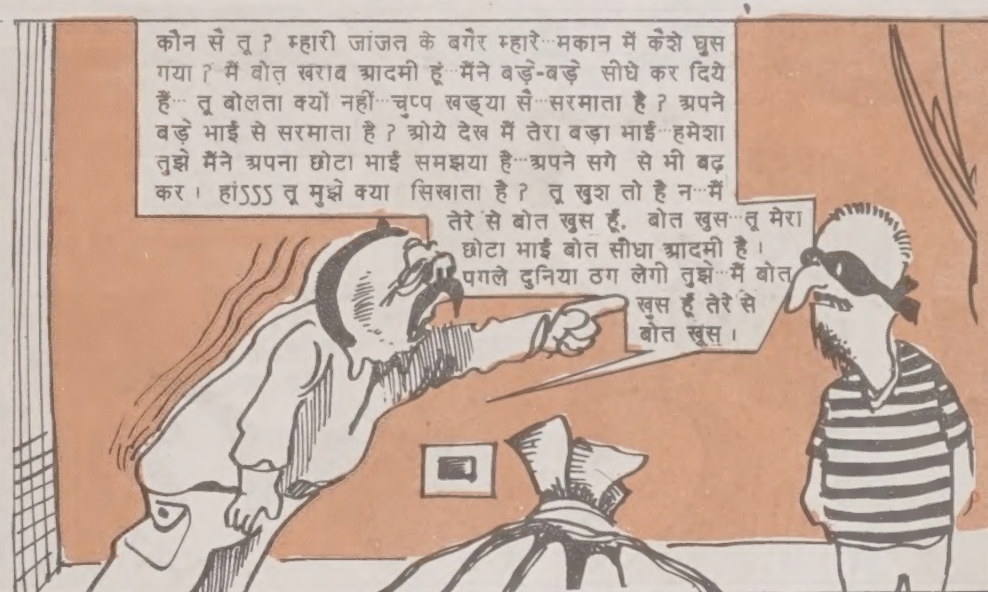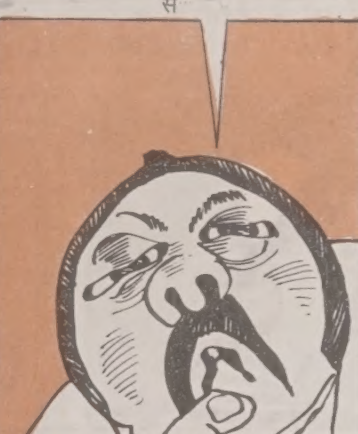
अच्छा छोटे भाई···टैम क्या हुआ है ? टैम···टैम की ऐसी-तैसी··· आज तारीख क्या है बोल ? तुझे बोलना पड़ेगा वर्ना मुझे गुस्सा आयेगा।
आज पहली जनवरी की सुबह है बड़े भाई जी।
पहली जरनवी है···ठीक है, पहली जवनरी···बोत ठीक है। पहली जरनवी को कोई आने वाला था। कौन आने वाला था। मुझे न मालूम···मुझे न मालूम···कैसे बताऊं बिताई कैसे रतियां मैंने साजन के साथ होऽऽऽऽ।
पागल हो गया है।

अरे पहली जनवरी से आज। इब मुझे जाद आ रिया है कि कौन आने वाला था आज। आज कुछ नया आने वाला था···नया बिलकुल एकदम नया···जैसे फैक्ट्री से निकला हुआ है। क्या आने वाला था···बिलकुल नया···क्या···हां···नया तो होगा···क्या होगा अरे-अरे···नया साल, याद आया अब नया साल।
न्यू इयर !

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

बन्द करो बकवास

क्या से क्या हो गया बेवफा तेरे प्यार में ।

बन्द करो बकवास, ड्राई डे के दिन बार्डर पर बोतलें ले जाना चाहते हो ।

कह दो कोई ना करे यहां प्यार ।

बन्द करो बकवास, जजमान अगर तुम नहीं चाहते कि मन्दिर के बगीचे में प्रेमी बैठा करें तो नोटिस लगा दो। रोज शाम को यह गाना गाने की जरूरत नहीं ।
THE NATIVE

अगर मुझसे मुहब्बत है मुझे सब अपने गम दे दो ।

बन्द करो बकवास, मैं आगे ही परेशान हूं । गम चाहिएं तो मेरी सास को ले जाओ अपने साथ ।

आपके पत्र

दीवाना का अंक ४६ मिला । यह बहुत ही मजेदार अंक है । फिल्मी इंटरव्यू लाजवाब था । छुट्टन और मिट्ठन हास्य से परिपूर्ण थे । काश ये हमें सुपरमेनों के भेष में नजर आते । कार्टून बना कर आपने नेताओं की विशेषताएं बतायीं । मदहोश बहुत ही लाजवाब था । दीवाना की पृष्ठ संख्या बढ़ाएं ।

अमिन जमादार—(गोवंडी) बम्बई

मैं दीवाना का जब से नियमित पाठक हूं जब इसकी कीमत मात्र ३० पैसे थी । यह कहना भी गलत न होगा कि इस समय तो क्या पिछले १० वर्षों से दीवाना के मुकाबले कोई हास्य व्यंग्य की साप्ताहिक तो क्या कोई मासिक पत्रिका भी नहीं है । परोपकारी, पिलपिल-सिलबिल, मोटू-पतलू, मदहोश, छुट्टन-मिट्ठन, फैण्टम, चिल्ली-लीला तो खासकर पाठक को दीवाना बना ही देती है पर क्यों और कैसे, खेल-खेल में, चाचा बातूनी स्तम्भ आज हर व्यक्ति को अपनी ज्ञान वृद्धि के लिए पढ़ना परम आवश्यक है ।

टी० एस० साहनी—दिल्ली

दीवाना की मनोरंजक और हास्यप्रद सामग्री का जवाब नहीं । दीवाना की हास्य प्रसिद्धि को देखते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है । यह पत्रिका हास्य सामग्री में सर्वश्रेष्ठ है ।

अभी मैंने दीवाना का ४५ वां अंक पढ़ा । यह अंक भी विशेष रूप से सराहनीय है । खासकर मुझे काका के कारतूस, आपस की बातें, खेल-खेल में और क्यों और कैसे बहुत मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक लगती हैं । अगर आप काका के कारतूस स्तम्भ में सर्वश्रेष्ठ प्रश्न पर इनाम रख दें तो दीवाना हीरे की तरह जगमगाता रहेगा ।

चिन्ताराम गिरि 'राजा'—दुलियाजान

दीवाना अंक ४८ मिला और बहुत पसन्द आया । कहना नहीं पड़ेगा कि पहले की तरह यह अंक आकर्षक था । मैं दीवाना ७ वर्ष से नियमित रूप से पढ़ रहा हूं । इस अंक में मोटू-पतलू, काका के कारतूस, चिल्ली लीला आदि बहुत मजेदार थे । क्यों और कैसे नामक स्तम्भ बहुत ही ज्ञानवर्द्धक है । कृपया अर्थ-अनर्थ, जैसा बोर स्तम्भ बन्द कर दें । और इस बार की कहानियां बहुत पसन्द आईं ।

के. के. अरोरा (कंचन)—दिल्ली

अंक नं० ४६ प्राप्त हुआ । इसके प्राप्त करने के लिए हमें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा । कारण यह है कि प्रत्येक सप्ताह दीवाना हमारे लिए उतना ही आवश्यक है जितना खाना । दीवाना एक हास्य-व्यंग का ऐसा भण्डार है जिसे पढ़ने के बाद कैसा भी दुख हो फिलहाल के लिए दूर हो जाता है । इस अंक में डा० झटका का 'प्लास्टिक सर्जरी' बड़ा ही मजेदार रहा, वैसे फिल्म इटरव्यू, काका के कारतूस, चिल्ली लीला ने तो दीवाना में चार चाँद लगा दिये । हमारी तरफ से दीवाना (चिल्ली) को लाख-लाख सलाम ।

इसराईल बी० कोम०—ऐनास्लामपुर

दीवाना का अंक ४७ मिलने से एक दिन पहले मुझे बुखार था परन्तु जब मेरा भाई यह अंक घर में लेकर आया तब सच मानिए मेरा आधा बुखार मुख पृष्ठ को देख कर ही उतर गया और इस अंक में मुझे फिल्म जगत के जीव-जन्तुओं से आपका एक परिचय बहुत अच्छा लगा । वैसे तो चिल्ली लीला, दीवानी-चिपकी, मोटू-पतलू, छुट्टन और मिट्ठन, भी काफी अच्छे लगे ।

पीताम्बर—उल्हासनगर

दीवाना का १ दिसम्बर का अंक नं० ४७ पढ़ा । मुख पृष्ठ पर वीर सेनानी अर्थात् चिल्ली को गुलेल से बम छोड़ते देखा तो बहुत हंसी आई । अन्दर के पृष्ठों में चिल्ली के निर्देशन में बनी फिल्म 'मोटम-पतलम चेलाराम' पढ़ी । वाकई फिल्म अच्छी थी । मुझे तो आशा है सिल्वर जुबली मनाएगी । पिलपिल का सपना लाजवाब था । धारावाहिक उपन्यास 'आखरी चीख' अच्छी चल रही है । दीवाना फीचर 'फिल्म जगत के जीव जन्तुओं से आपका परिचय' जब पढ़ा तो हंसा-हंसा कर पेट में दर्द कर दिया बाकी सभी स्थायी स्तम्भ मजेदार एवं मनोरंजक लगे ।

डी० के० मटाई—इन्दौर

हास्य-रस से सराबोर दीवाना का अंक नं० ४७ प्राप्त हुआ । मुख पृष्ठ से लेकर अन्तिम पृष्ठ तक सारी सामग्री रोचक व हास्यपूर्ण थी । मुख पृष्ठ देख कर ही कहकहे लगाने को जी चाहता था । 'दीवानी चिपकी' 'फिल्म जगत के जीव जन्तुओं से आपका परिचय' 'सर्दियों का दीवाना मतलब' 'पिलपिल सिलबिल' और 'मोटू-पतलू' लुभावने फीचर थे । कृपया 'मनोरंजन स्ट्रीट' जैसा रुचिकर स्तम्भ फिर से आरम्भ कर दें और 'शब्दों की हेरा फेरी' भी प्रकाशित किया करें ।

हरीश कुमार 'अमित',—सिरसा

दीवाना का नया अंक मिला । मुख पृष्ठ बहुत ही सुन्दर लगा । इस अंक में मोटू-पतलू, मदहोश, सिलबिल-पिलपिल और दीवाना पंचतंत्र बहुत ही रोचक रहे । आशा है कि दीवाना पत्रिका इसी तरह प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहेगी व इसी प्रकार यह पत्रिका भविष्य में हमारा मनोरंजन कराती रहेगी । दीवाना के सभी कलाकारों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई ।

निरभै सिंह—मोगा

'बुनाई विशेषांक' कई पत्रिकाएं निकाल रही हैं जिनमें बहुत विस्तार से स्वेटर बुनने के सिरदर्दी वाले तरीके बताये जाते हैं पर अंक ४८ में श्री चिल्ली की धर्मपत्नी लिल्ली ने मुख पृष्ठ पर आकर बुनाई का जो तरीका दिखाया वह तो सब बुनाई विशेषांकों को मात दे गया, बधाई ।

'दीवाना पंचतंत्र' को हमारे बुजुर्ग लोग बहुत पसन्द करते हैं तो 'मोटू-पतलू', 'छुट्टन और मिट्ठन' और 'पिलपिल-सिलबिल' हमारे बच्चों और छोटे भाई बहनों का अत्यधिक मनोरंजन करता सिद्ध हुआ है और युवा वर्ग में ज्ञानवर्धक स्तम्भ 'क्यों और कैसे', 'खेल-खेल में' 'मदहोश' व फिल्मी स्तम्भ काफी लोकप्रिय हैं । कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि अब दीवाना हर आयु वर्ग में काफी पसन्द की जा रही है ।

साहनी—दिल्ली

अंक ४८ मिला, प्रथम पृष्ठ पर जो चिल्ली महोदय ने बुनाई का एक नया नमूना पेश किया है वह तो वाकई तारीफ के काबिल है । बाकी सभी स्तम्भ रोचक रहे । मेरा आपसे अनुरोध है कि जनवरी का प्रथम अंक 'नववर्ष विशेषांक' जारी करें जो कि सभी दीवाने भाइयों को नये साल की बधाई प्रदान करे ।

गनेश मित्तल 'हलवाई'—गाजियाबाद

मोटू-पतलू की रहस्य कथा

मौत का घंटा

पिछले दिनों बेला अपने मंगेतर हरीश से मिलने मद्रास पहुंची तो चेलाराम उसके साथ था। वहां समुद्र के किनारे घूमते हुए उन्होंने एक मन्दिर की चोटी से एक बड़ा घंटा और उसके साथ एक आदमी समुद्र में गिरते देखा। तीन तैराकों ने जब आदमी को बाहर निकाला तो बेला को पता चला कि वह उसका मंगेतर हरीश है। हरीश की मृत्यु हो चुकी थी और उसे समुद्र से निकालने वालों में एक उसकी मौसी का लड़का गणेश था।

कुछ दिन पहले पुलिस को एक पत्र मिला था, जिसमें हरीश ने लिखा था कि वह जीवन से तंग आकर आत्महत्या कर रहा है। इस पत्र के बारे में हरीश का कहना था कि वह जाली है।

हरीश का इम्पोर्ट एक्सपोर्ट का बिजनेस था, केरल में उसके नाना के काजू के बड़े-बड़े बाग थे। मद्रास में भारी सम्पत्ति थी और यह सारी सम्पत्ति हरीश को मिलने वाली थी। पर नाना की एक वसीयत के अनुसार यह सम्पत्ति हरीश को तभी मिलती, जब वह बेला से विवाह करता। ऐसा न हो सकने पर वसीयत में लिखा था कि इस सम्पत्ति के लिए एक ट्रस्ट बना दिया जाए जिसकी चेयरमैन बेला होगी।

हरीश के बदन पर गोली लगने का या किसी और प्रकार का घाव नहीं पाया गया था। पोस्ट मार्टम करने पर उसके मेदे में से किसी प्रकार का जहर नहीं मिला था। बेला हरीश से विवाह करना नहीं चाहती थी। उसे रुपये का मोह नहीं था। हरीश के समुद्र में डूब कर मरने को आत्महत्या माना गया और इसका कारण माना गया बेला का विवाह से इनकार और इस इनकार से हरीश को लाखों रुपये की सम्पत्ति न मिलने की सम्भावना।

चेलाराम इस केस की गुत्थी को सुलझा रहा है और उसके साथ ही हरीश की कोठी पर ठहरे हुए हैं, बेला, उसकी मम्मी, मोटू-पतलू और घसीटा राम...! और इस समय बेला की सहायता के लिए वहां उपस्थित है, हरीश की मौसी का लड़का गणेश।
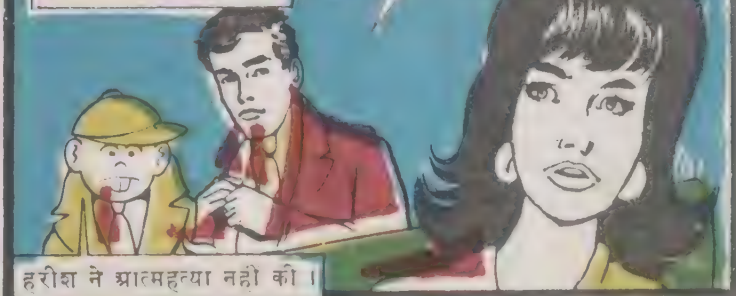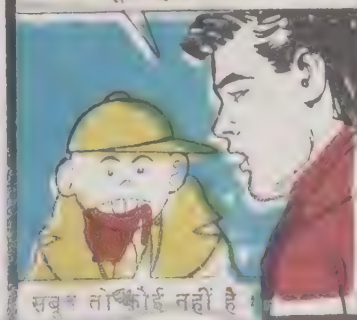
यह तो मैं नहीं कह रहा हूं।
देखो बेला, मैं विवाह का प्रस्ताव लेकर आया था, बहस करने नहीं। हरीश की मृत्यु का कारण अगर रुपया है तो वह अब मेरे पास नहीं, तुम्हारे पास आ रहा है।
और उस रुपये को आना चाहिये तुम्हारे पास।

यानि अगली हत्या बेला की होगी? कहो तो आत्महत्या का एक पत्र बेला से लिखवा कर अभी से तुम्हें दे दूं?
एक पत्र तुम भी लिख दो, अच्छा है। बस इतना याद रखना कि किसी की गर्दन पर हाथ डालने से पहले अपनी गर्दन छू कर देख लेना।

मैं दावे से कह सकता हूं कि हरीश की हत्या उसके रिश्ते के भाई गणेश ने की।
पर इसका सबूत तो नहीं है कोई।

मेरा विचार है सबसे पहले उस मन्दिर के पुजारी से बात करो, जहां से घंटा गिरा था।

मन्दिर के पुजारी ने उन्हें बताया...
मुझे इतना पता है कि हरीश बाबू ज्ञान-ध्यान में विश्वास रखते थे, नियमित रूप से मन्दिर आते थे और सबसे ऊपर जा कर घंटा बजाते थे। घंटे की जंजीर ऊपर से ढीक हो रही थी और उसकी मरम्मत के लिये हमने कई बार मिस्त्री बुलवाया था।
एक बात और है जी। आज से दो सौ साल पहले इसी प्रकार यह घंटा मन्दिर से गिरा था। इसके साथ एक आदमी भी लपेट में आ गया था और उसकी मृत्यु हो गई थी, ठीक इसी तरह।

इसे भगवान की लीला कहो, या कुछ और। जब वह घंटा समुद्र से निकाला गया, तो उस पर हत्यारे का नाम अंकित था।
क्या यह बात सच्ची है?
सच्ची ही नहीं है, इसे यहां का बच्चा-बच्चा जानता है। भगवान की इस महिमा की याद में हम यहां हर साल एक उत्सव मनाते हैं।
भगवान की दिखाई न देने वाली आंखें सब कुछ देखती हैं, भगवान को हत्यारे का पता था। उसने घंटे पर हत्यारे का नाम अंकित कर दिया और हत्यारा पकड़ा गया।
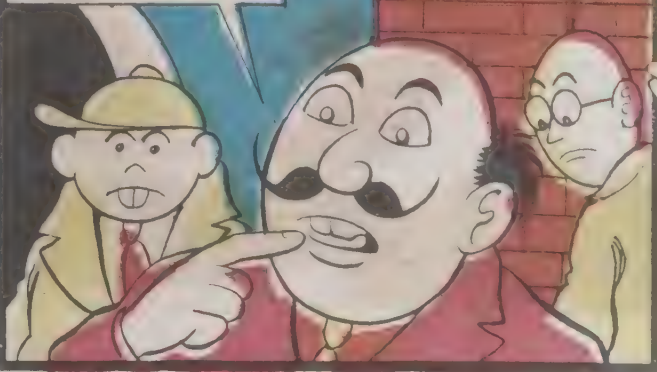
दो सौ साल पहले की कहानी को पक्के विश्वास के साथ चेलाराम ने बेला के पास आ कर दोहराया।

पुजारी ने कहा है, और यहां का बच्चा-बच्चा जानता है कि दो सौ साल पहले इसी तरह मन्दिर का यह घंटा समुद्र में गिरा था। इसके साथ ही एक आदमी की हत्या करके उसके मृतक शरीर को घंटे के साथ फेंका गया था।
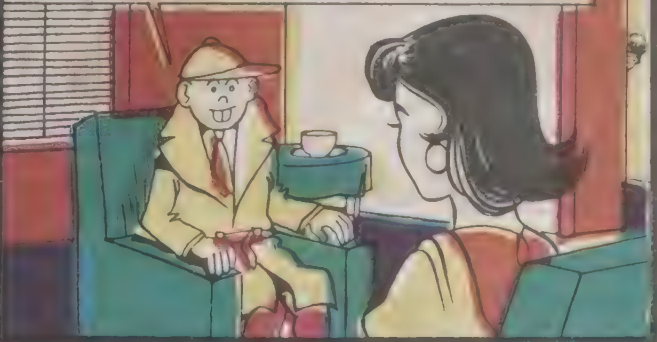
और यह भगवान की लीला है कि जब यह घंटा समुद्र से निकाला गया, तो इस पर हत्यारे का नाम अंकित था।

यह कहानी तो वास्तव में बिल्कुल सच्ची है।

अब हरीश के हत्यारे का नाम भी घंटे पर अंकित हो गया होगा। पुलिस ने क्रेन मंगवाई है। कल शाम तक समुद्र से घंटा निकालने का काम शुरू हो जाएगा।

कहते हैं दीवारों के भी कान होते हैं पर यहां तो यह बात दो असली कानों ने भी सुन ली थी, जो साया बन कर दीवार के साथ लगे थे। और बेला सोच रही थी।

अचानक उसने अपने गले पर किसी की उंगलियों का दबाव महसूस किया।
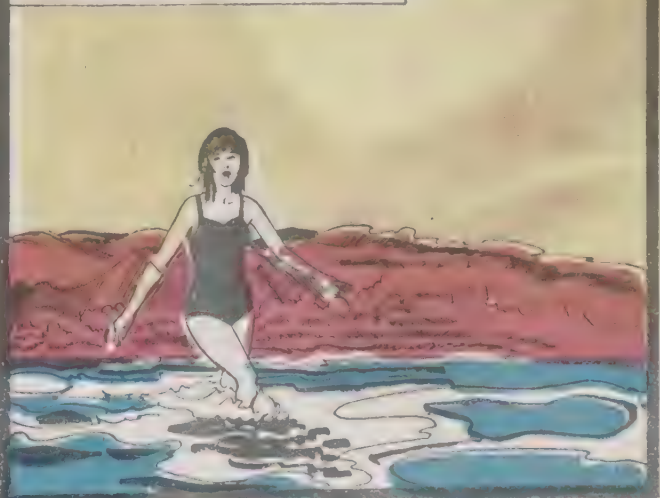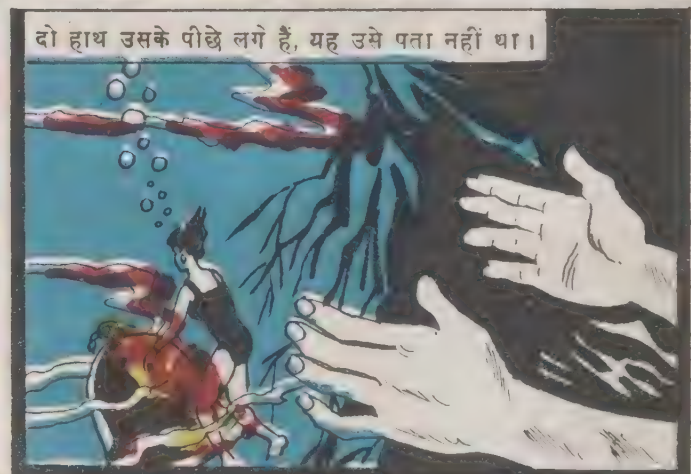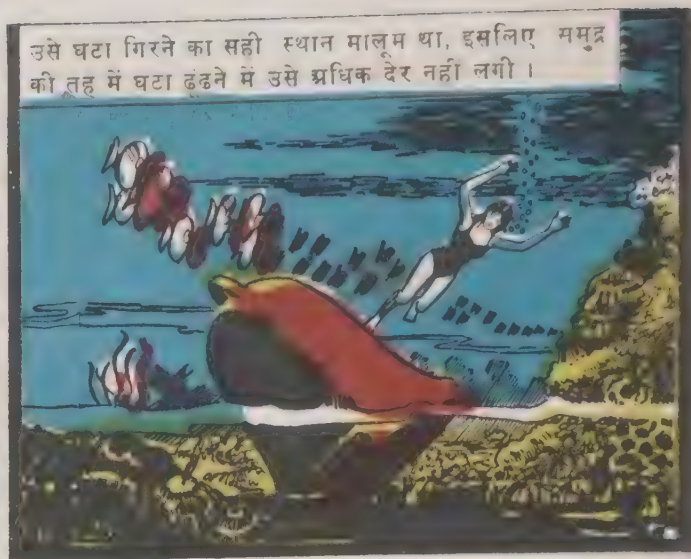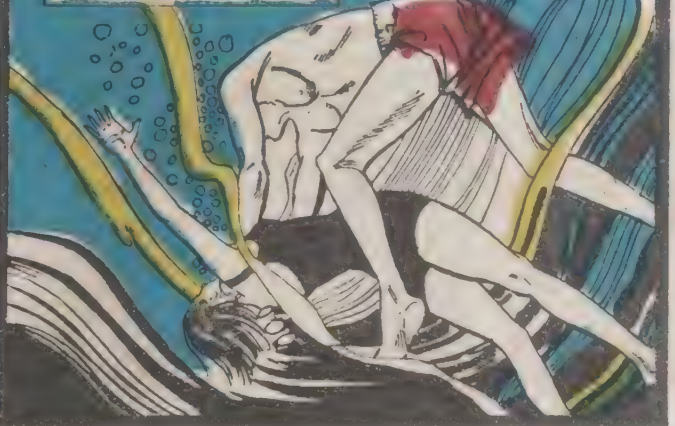
यह छेनी और हथौड़ा साथ है, क्या मछलियां पकड़ने के लिये ? गणेश ने सोचा, मैंने हरीश की हत्या की है, तो घंटे पर भगवान ने मेरा नाम अंकित कर दिया होगा । जब तक पुलिस क्रेन से घंटे को समुद्र से बाहर निकाले, क्यों न मैं छेनी हथौड़े से अपना नाम मिटा कर किसी और का नाम अंकित कर दूं ।

दो सौ साल पहले वाली कहानी पर मैंने इसीलिए बल दिया था कि जैसे चोर की दाढ़ी में तिनके वाली बात है, असल हत्यारा घंटे पर से अपना नाम मिटाने के लिये अवश्य समुद्र में डुबकी लगायेगा । पुलिस इन्स्पेक्टर को यह बात समझा कर मैं पहले ही पुलिस पार्टी के साथ समुद्र तट पर छुपा हुआ था । यहां गणेश को बेला भी मिल गई तो इसने सोचा विवाह से इनकार करने वाला शिकार कितनी आसानी से हाथ आ गया है । गला घोंट कर मार दो तो लोग इसे भी आत्महत्या का केस समझेंगे, पानी में तो गले पर उंगलियों के निशान भी नहीं पड़ेंगे ।

मैंने इस केस की पूरी छानबीन कर ली है । हरीश की हत्या में जिन दो आदमियों ने गणेश का साथ दिया वह मैंने पहले ही पकड़वा दिये हैं । गणेश के यह दो साथी थे जिन्होंने समुद्र में गोता लगा कर डूबे हुए हरीश को निकाला था ।

हत्या का कारण है गणेश के नाना की लाखों की सम्पत्ति। नाना की दो लड़कियां थी। एक का लड़का था हरीश और दूसरी का लड़का है गणेश ! किसी कारणवश नाना गणेश से खुश नहीं थे। उनकी वसीयत के अनुसार उस सम्पत्ति को हड़पने के लिए गणेश के पास एक ही तरीका था कि वह हरीश को समाप्त कर दे। बेला सम्पत्ति के ट्रस्ट की चेयरमैन बने और गणेश उससे विवाह कर ले तो लाखों का माल अपना। यही सोच कर गणेश ने हत्या की स्कीम बनाई। गणेश को पता था कि हरीश नियमित रूप से मन्दिर जाकर घंटा बजाता है। घंटे की जंजीरमरम्मत करने वाले मिस्त्री बन कर गणेश के दोनों साथी एक दिन हरीश की पूजा के समय पर मन्दिर गये। वहीं मौका देख कर गणेश ने हरीश का गला दबा कर उसकी हत्या कर दी और उसके शव को घटे के साथ बांध कर समुद्र में फेंक दिया गया और कहा गया कि घंटा तो जंजीर जोड़ते समय फिसल कर गिरा है। और हरीश ने मन्दिर के ऊपर से कूद कर आत्महत्या की है।

आगामी अंक में इन कलाकारों का एक और फड़कता हुआ कारनामा देखिये।

छुट्टन और मिट्टुन का शुभचिंतक

बच्चा झमूरा

आइए, तालियां बजाइए ! एक और धांसू कलाकार आपको महफिल में हाजिर है । इसका नाम है, बच्चा झमूरा । यह किस मिट्टी से बना है, यह तो आप ही बतायेंगे । बच्चा झमूरा हर आदमी का शुभ चिंतक है । यह अलग बात है कि झमूरा जिसके सर की खैर मनाता है, उसका सर फूटने में अधिक देर नहीं लगती । बच्चा झमूरा आपकी हर बात मानने को तैयार है, पर एक बात अपनी भी मनवाना चाहता है कि भगवान ने जितनी अक्ल इसे दी है उतनी किसी को नहीं दी ।

बच्चा झमूरा अभी-अभी छुट्टन और मिट्टुन के पडौस में आ कर बसा है । क्या आप इन दोनों की सलामति के लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे ?

अब मैं तुम्हारे पड़ौस में आ गया हूं तो तुम्हें किस बात की चिन्ता है । माना कि दुनिया का सारा ज्ञान किताबों में है, पर मैं तो पूरी दुनिया और सारी किताबों का इंसाईक्लोपीडिया हूं । इधर तुम पर कोई मुसीबत आई और उधर मैंने उसे चला दिया । अब तो समझो दिन फिर गए तुम्हारे ।

मेरा अपना क्या है । मैं तो दूसरों का नाम लेकर जीता हूं । दूसरों के झंडे ऊंचा करता हूं । फूलों की माला पड़े तो दूसरों के गले में और कहीं तालियां बजे तो दूसरों के लिए ।
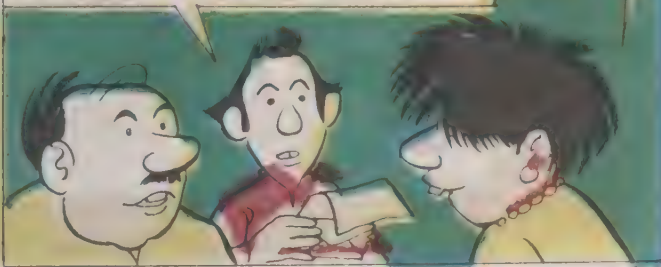
छुट्टन और मिट्टुन राजकुमारी वदना की पार्टी के लिए चले तो झमूरा भी उनके साथ हो लिया ।

पार्टी में पहुंचे तो राजकुमारी वन्दना ने सबसे छुट्टन और मिट्टुन का परिचय कराया । दीवाना के पृष्ठों पर देखकर सभी इनसे मिलने के इच्छुक थे, और सबकी नजरों में इनकी बहुत इज्जत थी । एक प्रकार से यह राजकुमारी की पार्टी के चीफ गैस्ट बन गये थे । उधर बच्चा झमूरा को आईसक्रीम की प्लेटें साफ करने से फुर्सत नहीं थी । वह छुट्टन और मिट्टुन के साथ था इसलिये पार्टी में उसका भी उतना ही सम्मान किया गया था । वह जाते-जाते वेटर को पकड़ कर जिस प्लेट पर चाहता था हाथ साफ कर जाता था ।

सब मेहमान खाने-पीने मे लगे रहे और छुट्टन और मिट्ठन को अपने 'फैन' से मिलने मे ही फुर्सत नहीं मिली। अब हालत यह थी कि छुट्टन और मिट्ठन पास मे जाते किसी वेटर की ट्रे मे कुछ उठाने की कोशिश भी करते थे तो वह बुरा-सा मुह बनाकर परे हट जाता था।

अब हालत यह थी कि छुट्टन और मिट्ठन पानी के एक गिलास को तरस रहे थे। और उनके पास ही खड़ा बच्चा भमूरा प्लेटों पर प्लेट साफ कर रहा था। बाकी मेहमान तो एक तरफ, अब राजकुमारी वन्दना भी छुट्टन और मिट्ठन पर ताव खाने लगी थी।

थोड़ी ही देर मे हालत यह हुई कि पार्टी में उपस्थित एक भी मेहमान छुट्टन और मिट्ठन की शक्ल देखने को तैयार नही था और बच्चा भमूरा के हाथ मे आईसक्रीम की दसवीं प्लेट थी।

हमने एक गिलास पानी का भी नहीं पीया।

फिर भी इन लोगों ने हमें खाने का भूखा कह कर पार्टी से बाहर फेंक दिया।

मैंने भी बस आईसक्रीम की दस प्लेटें खायीं और मैं बेटरों से हर वार तुम दोनों का नाम लेकर प्लेटें लाता रहा। मैने कहा था न, मैं तो बस दूसरों का नाम लेकर जीता हूं। दूसरों के झंडे ऊंचे करता हूं। फूलों की माला दूसरों के गले मे पड़े। मैं तो बस ताली बजाने वालों में से हूं।

पर तुम्हें क्या हुआ ? क्या कुछ भी खाया पिया नहीं तुमने ? मैं अभी तुम्हारा नाम लेकर आईसक्रीम लाता हूं।

बच्चा भमूरा फिर एक नया हंगामा लेकर आ रहा है, दीवाना के आगामी अंक में।

ओम प्रकाश बवेजा—फरीदाबाद

प्र० : गिल्ली-डंडे का आविष्कार सबसे पहले किस देश में हुआ। क्या इसके कोई ओलम्पिक टैस्ट हुए हैं ?

उ० : गिल्ली-डंडा जैसे कि नाम से स्पष्ट है भारत की ही देन है। इसे भारतीय क्रिकेट समझना चाहिए। दोनों खेलों की कई बातें मिलती हैं। इसका ओलम्पिक टैस्ट तो क्या भारत में भी विधिवत मैच आयोजित नहीं हुआ है। यह खेल बच्चों तक ही सीमित है।

मुखचरन सिंह बेदी—कलकत्ता

प्र० : लाला अमरनाथ ने कितने टैस्ट खेले हैं तथा कितने रन बनाये ?

उ० : २४ टैस्ट ८७८ रन तथा एक शतक।

फरीद अहमद—मुरादाबाद

प्र० : न्यूजीलेंड के बेवन कांगडन तथा वेस्ट इंडीज के कालीचरण का पूरा टैस्ट रिकार्ड बताइये तथा यह भी बतायें कि इन की औसत क्या है ?

उ० : बेवन कांगडन ने ५५ टैस्टों में ३२८५ रन बनाये हैं, सात शतक बनाये इसके अतिरिक्त ३३.५४ रनों की औसत पर ५७ विकेट लिये हैं। कालीचरण ने ४० टैस्टों में २९२३ रन बनाये हैं ८ शतक मारे हैं।

जसवन्त सिंह नारंग—मंदसौर

प्र० : इंग्लेंड के क्रिकेट खिलाड़ी टानीग्रेग की ऊंचाई कितने फुट है ?

उ० : ६ फुट सात इंच।

भवंर लाल आचार्य—कलकत्ता

प्र० : नवाब पटौदी का टैस्ट रिकार्ड क्या है ?

उ० : ४२ टैस्टों में पटौदी ने २९९९ रन बनाये हैं उच्चतम स्कोर २०३ रन नॉट आउट।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी—विक्रम गंज

प्र० : अब की ओलम्पिक के लिये भारत की तैयारी कैसी है, क्या कुछ आशा की जा सकती है ?

उ० : अब तक तो कोई तैयारी नजर नहीं आती। आशायें भी कम ही हैं, उससे

पहले तो विश्व हॉकी कप (१९७८) की तैयारी ही खटाई में पड़ी हुई है।

कु० रानी थारवानी—कटनी

प्र० : 'क्यू' शब्द किस खेल से संबंधित है ?

उ० : बिलियर्ड।

सुरेश चीटू—मलोट (पंजाब)

प्र० : किरमानी का हाई स्कोर क्या है और उसने अपने जीवन में कितने कैच किये हैं ?
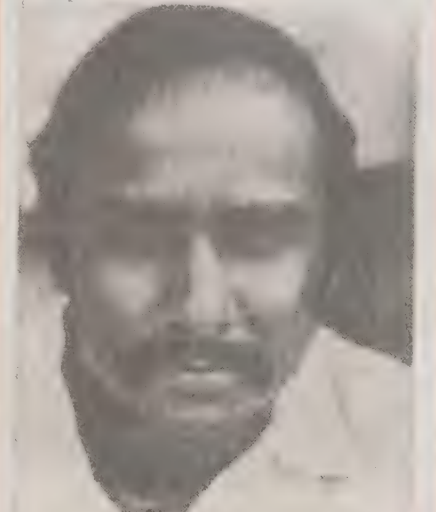
उ० : किरमानी ने उच्चतम स्कोर ८८ रन बनाये हैं व २७ कैच लिये हैं।

याद. के. सुगन्ध—रिवाड़ी

प्र० : विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ी (फुटबाल का) पेले ने कितने गोल विपक्षी टीमों को ठोके हैं ?

उ० : पेले ने प्रथम श्रेणी मैचों में १२७७ गोल ठोके हैं।

वीर शंकर पमनानी—मधुबनी

प्र० : रन लेने के लिये दौड़ते समय यदि बल्लेबाज विकेट पर गिर पड़े या टकरा जाये तो वह आउट कर दिया जाता है या नहीं ?

उ० : हिट विकेट आउट होगा। यदि बैटसमैन की टोपी भी झटके से गिरकर विकेट गिरा देती है तो वह आउट माना जाता है।

मनोहर गुरनानी—मेरठ

प्र० : विश्व क्रिकेट में सर्वश्रेष्ठ विकेट कीपर कौन है और उसने अब तक कितने स्टम्प लिये हैं या कितने खिलाड़ियों को स्टम्प आउट किया है ?

उ० : इंग्लेंड के एलेन नॉट। उन्होंने ८४ टैस्टों में २२१ कैच लिये व १९ स्टम्प किये।

भूपेश पाण्डे—मंदसौर

प्र० : प्रसिद्ध कुश्ती चैम्पियन दारासिंह व रणधावा ने क्या कुश्ती से संन्यास ले लिया है ?

उ० : दोनों ने विधिवत संन्यास नहीं लिया है। साल में एक-आध बार वे तमाशा दिखाते ही रहते हैं।

अब्दुल जबार—बीकानेर

प्र० : गावस्कर कितने सालों से क्रिकेट खेल रहा है ? अब तक कितने मैच खेल चुका है ?

उ० : गावस्कर ने टैस्ट क्रिकेट १९७१ से खेलना शुरू किया है।

गुरदीप सिंह छाबड़ा—

प्र० : विश्व में सबसे ज्यादा विकेट किसने लीं और उसका नाम क्या है, कहाँ का रहने वाला है ?

उ० : वेस्ट इंडीज के लांस गिब्ज। ३०९ विकेट ?

विरेश सक्सेना—नई दिल्ली

प्र० : ओलम्पिक भारत में कब होंगे ?

उ० : शायद कभी नहीं।

सुखचरन सिंह 'बेदी'—कलकत्ता

प्र० : विश्व में फुटबाल चैम्पियन कौन है तथा किस देश का खिलाड़ी है ?

उ० : पूर्व जर्मनी ओलम्पिक चैम्पियन है ?

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

प्रधान मंत्री
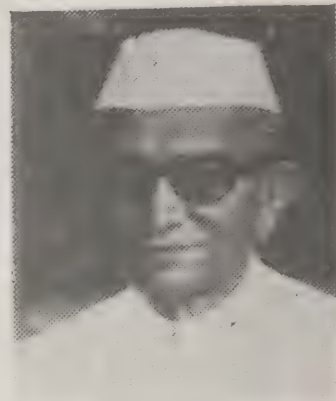
सन्देश

परिवारों से ही राष्ट्र बनता है। यदि परिवार बहुत बड़े हों और अपनी जिम्मेवारी स्वयं न सम्भाल सकते हों तो वे सुखी जीवन बिताने की आशा नहीं कर सकते। इसका सबसे बुरा असर माताओं और बच्चों पर पड़ता है। बच्चों को पूरी तरह बढ़ने का अवसर नहीं मिलता और बार-बार के गर्भ धारण से मां का स्वास्थ्य बर्बाद हो जाता है।

राष्ट्रीय प्रगति के विभिन्न क्षेत्रों में आज जो हम धन लगा रहे हैं उसका चरम उद्देश्य जीवन को हर दृष्टि से समृद्ध और खुशहाल बनाना है। परिवार कल्याण कार्यक्रम इस पूंजी निवेश का अनिवार्य अंग है। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि हमारे लोग इस कार्यक्रम के सही परीप्रेक्ष्य को समझेंगे और बिना किसी पूर्वाग्रह के इसे स्वीकार करेंगे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि केन्द्र और राज्यों के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय इस वर्ष देश भर में 15 से 31 दिसम्बर के बीच राष्ट्रीय परिवार कल्याण पखवाड़े का आयोजन कर रहे हैं। मैं कार्यक्रम में लगे सभी व्यक्तियों को अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ और पखवाड़े की सफलता की कामना करता हूँ।

नई दिल्ली,
30 नवम्बर, 1977

मोरारजी देसाई

डीएवीपी 77/385
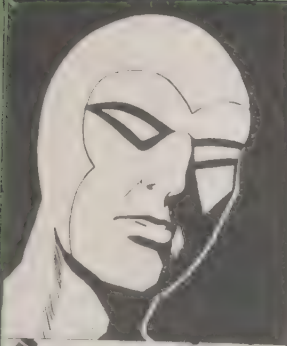
फैण्टम और
जाल देवता

पुराने जमाने में पूर्वी क्षेत्र के लोग मनुष्य की बलि दिया करते थे।
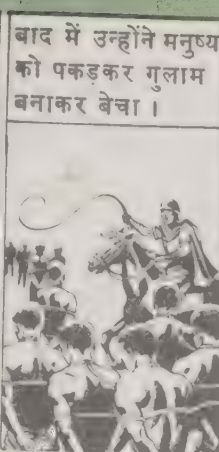
बाद में उन्होंने मनुष्य को पकड़कर गुलाम बनाकर बेचा।
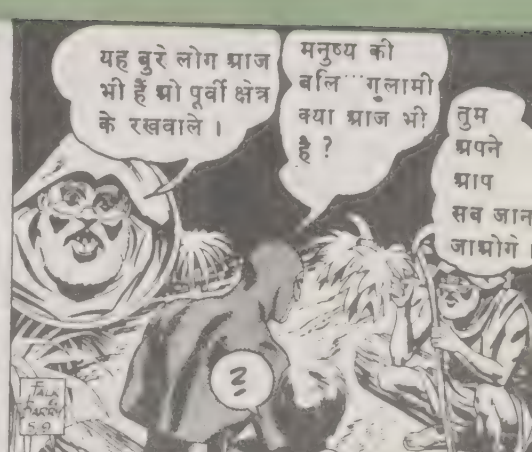
यह बुरे लोग आज भी हैं ओ पूर्वी क्षेत्र के रखवाले।
मनुष्य की बलि ... गुलामी क्या आज भी है ?
तुम अपने आप सब जान जाओगे।
?
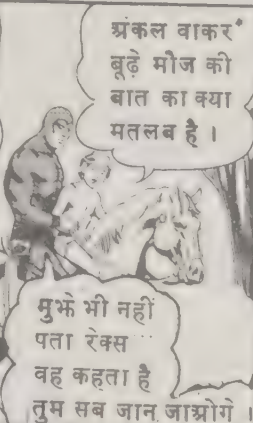
मनुष्य की बलि ... गुलामी आज भी है।
अंकल वाकर* बूढ़े मौज की बात का क्या मतलब है।
मुझे भी नहीं पता रेक्स ... वह कहता है तुम सब जान जाओगे।
*चलते फिरते भूत का दूसरा नाम।

एक राहगीर जगल से गुजरता है।

?!
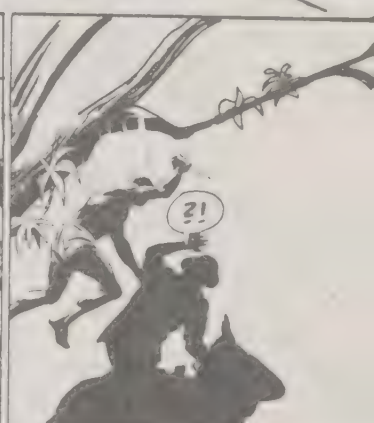
मेरा सारा पैसा ले लो ... मुझे मत मारो!

?!
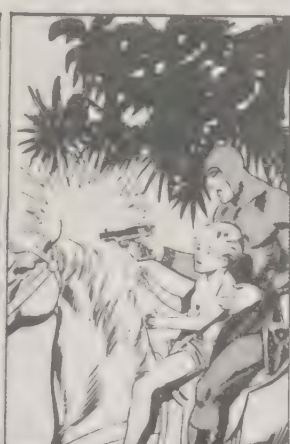
!
तुम्हें कोई चोट तो नहीं आई राही ?
धन्यवाद फैंटम! वो चोर मेरे पैसों के लिए मुझे जान से मारना चाहता था।

पिछले ३० सालों से मैं इस रास्ते पर आ जा रहा हूं लेकिन पहले ऐसा तो कभी नहीं हुआ।
बस अब हम शहर के कांफी करीब पहुंच गये हैं।

क्रमश:
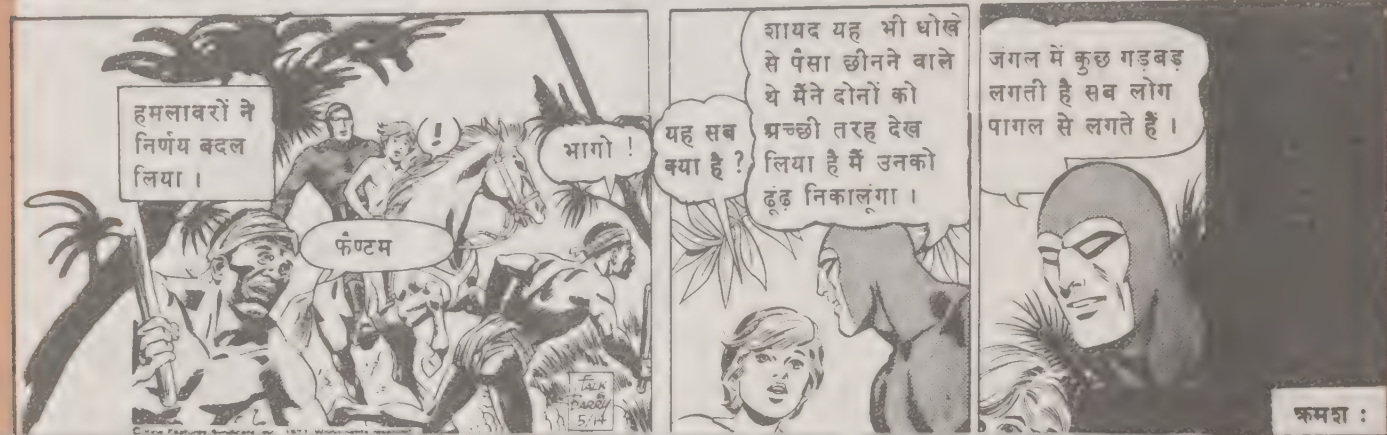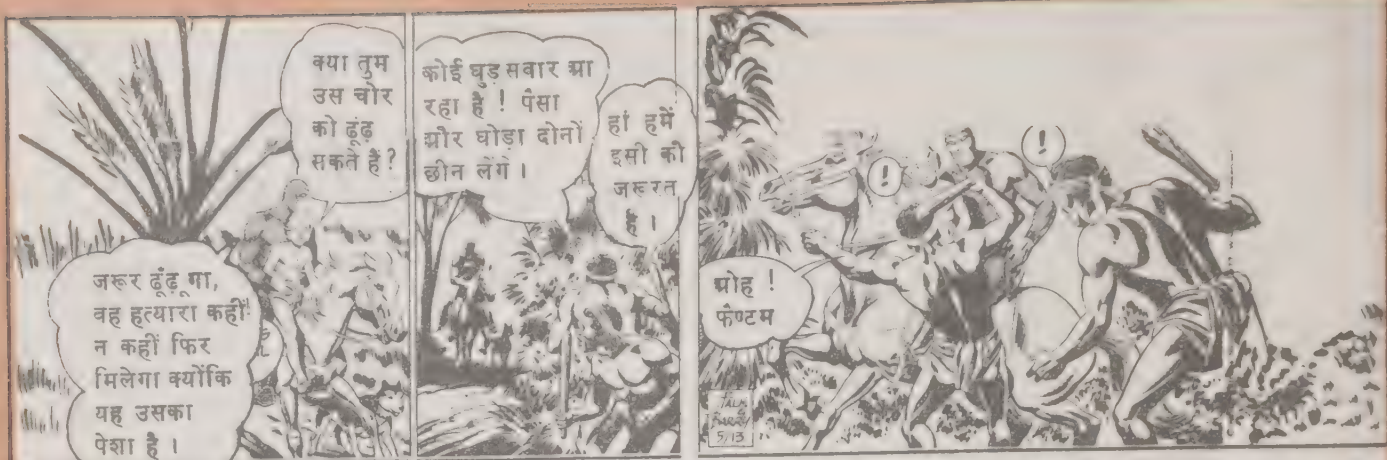
गुमनाम है कोई? प्रतियोगिता 26

इनाम 30 रु०

आपको यह बताना है कि यह तस्वीर किस कलाकार की है? और यह क्या दीवानी बात कह रहा है?

यदि एक से ज्यादा सही हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ट ब, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-2। हमारे कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि :— १४ जनवरी १९७८ – एक पोस्टकार्ड पर केवल एक ही हल भेजें।
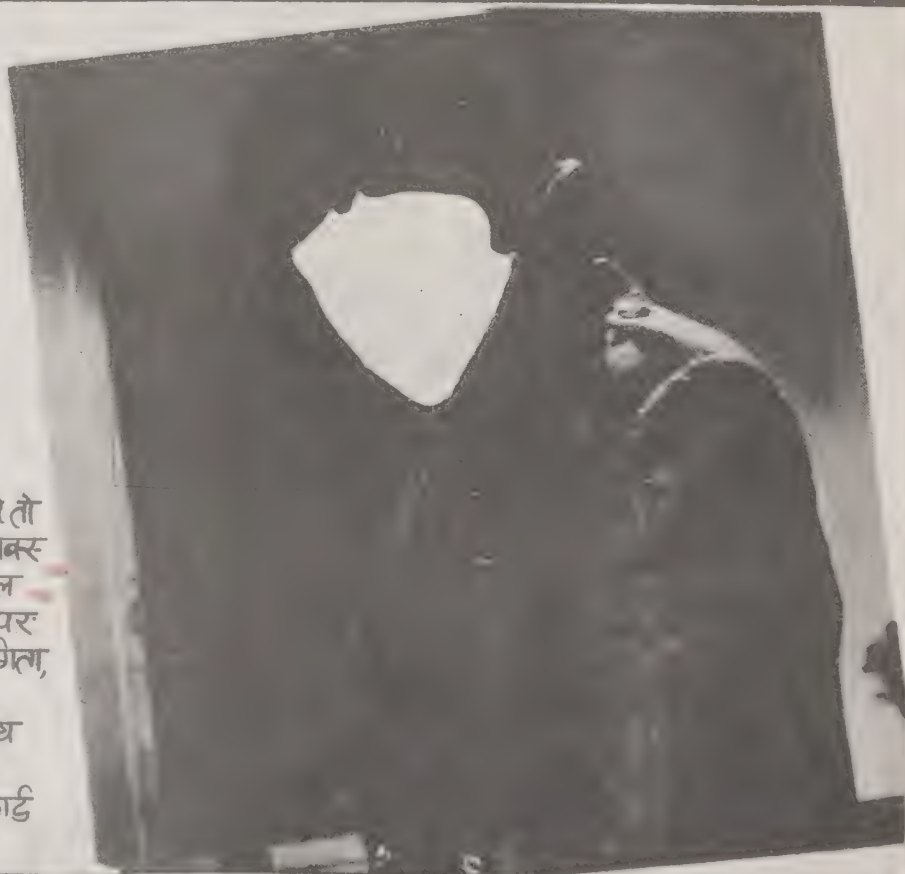
प्र० : क्या सब व्यक्तियों की अंगुली छाप भिन्न होती है। क्या अंगुली छाप को बदला जा सकता है? प्रभु दयाल—मेरठ

उ० : चलचित्रों, नाटकों तथा पुस्तकों में अनेक बार ऐसी स्थिति के प्रसंग आते हैं जिसमें दोषी व्यक्ति किसी स्थान पर अपनी अंगुली छाप छोड़ने के कारण पकड़ा जाता है। क्योंकि अंगुली छाप के प्रमाण में धोखा तथा गलती होना असम्भव है।

यदि अपनी अंगुलियों को देखें तो उसमें रेखाओं का एक जाल सा दिखाई देता है। ये रेखाएं उभरी हुई होती हैं, और इन्हीं के द्वारा किसी वस्तु को छूने पर हम उसका अनुभव करते हैं। इन रेखाओं के नमूने से ही अंगुली छाप बनती हैं। ये नमूना संसार के हर व्यक्ति की अंगुली में भिन्न होता है। इसी कारण संसार के हर व्यक्ति की अंगुली छाप भिन्न हैं, वे किसी दूसरे व्यक्ति से कभी भी नहीं मिलतीं। अंगुली के पोरवे को यदि बार-बार भी जलाया जाए, तो भी रेखाओं का वही नमूना घाव ठीक होने पर उभरता है। हर अंगुली छाप में एक प्रकार की बातें पाई जाती हैं, एक विशेष प्रकार की बनावट हर अंगुली में होती है, परन्तु रेखाओं के नमूने हर व्यक्ति के भिन्न होते हैं।

अंगुली छाप विशेषज्ञ इन नमूनों में लगभग सौ अलग-अलग बातें निकाल लेते हैं, पर यदि हाथ की एक अंगुली की भी छाप की केवल एक विशेषता को दूसरी अंगुली की छाप से मिलाने का प्रयास किया जाये तो सौ में से कम से कम चौंसठ व्यक्तियों की अंगुली छाप का निरीक्षण आवश्यक है। ये निरीक्षण तब आवश्यक है जब हम केवल एक अंगुली की केवल एक विशेषता को मिलाने का प्रयत्न करें, जबकि हर छाप में लगभग सौ विशेषताएं होती हैं और हमारी दस अंगुलियां हैं। इसी प्रकार यदि सौ विशेषता मिलानी हों तो संसार भर के व्यक्तियों की अंगुलियां देखनी पड़ेंगी, जो कि संसार में पिछले चार करोड़ वर्षों में पैदा हुए हों, अर्थात ये काम असम्भव है।

इतने बड़े संसार में किन्हीं दो व्यक्तियों की अंगुली छाप एक सी न होना, प्रकृति का बहुत ही बड़ा अजूबा है। हर व्यक्ति की अंगुली छाप उसकी निजी ही रहती हैं जब वह जीवित रहता है।

प्र० : एक्सरे क्या है, इसका आविष्कार कब और कहां हुआ?

प्रकाश, राजू, बब्बू—मुरादाबाद

उ० : एक्सरे का आविष्कार जर्मनी में सन् १८९५ में विलहम रोन्टजन नामक व्यक्ति ने किया था। इसलिए इन किरणों अथवा रेज को रोन्टजनरेजं भी कहा जाता है। ये शरीर के भीतर प्रवेश करने वाली किरणें होती हैं, वैसे ये प्रकाश किरणों के समान ही होती हैं। इन किरणों से भिन्न होती हैं एक्सरे की सबसे छोटी तरंग जो इसकी ट्यूब से निकलती हैं। प्रकाश किरण का १/१५००० तथा १/१०००,०००,००० वां हिस्सा होती है। जिन चीजों में प्रकाश किरण प्रवेश नहीं कर सकती उनमें एक्सरे आसानी से पहुंच जाती है। एक्सरे जितनी छोटी होती है उतनी ही शक्तिशाली होती है।

एक्सरे इसकी ट्यूब में तैयार होते हैं। एक्सरे की ट्यूब की वायु को जब तक बाहर पम्प किया जाता है। जब उसकी मूल वायु का १०००,०००,००० वां भाग उसमें रह जाए। इस शीशे की ट्यूब में दो विद्युदग्र होते हैं। इनमें एक का ऋणात्मक प्रवाह होता है ये कैथोड कहलाता है। दूसरे विद्युदग्र को लक्ष्य या एनोड कहते हैं। विद्युदग्र कैथोड से लक्ष्य तक के भाग में बड़ी तेजी से जाते हैं, इनकी गति लगभग ६०,००० से १७५,००० मील प्रति सैकिण्ड होती है। लक्ष्य के पास पहुंच कर इन्हें अचानक रुकना पड़ता है, जिसके कारण उनकी शक्ति ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। और एक्सरे एक खिड़कीनुमा स्थान से बाहर निकलती है। इन्हीं एक्सरेज द्वारा एक्सरे तस्वीर ली जाती है। जिस भाग की एक्सरे तस्वीर लेनी होती है, उसकी ओर इन किरणों को प्रवाहित किया जाता है, और ये किरणें उस भाग की छाया फिल्म पर अंकित कर देती हैं। फिर इन्हें फिल्मों की फोटो खींचने की भांति धोया जाता है। आज की चिकित्सा में एक्सरे तस्वीर का बड़ा महत्व है, इससे अनेक बीमारियों के बारे में शीघ्रता से पता लगाया जाता है।

प्र० : प्लास्टिक क्या है तथा कैसे बनता है? मोहन बुधलानी—इन्दौर

उ० : प्लास्टिक वो है जो हल्की, लचीली मजबूत, पानी और रसायनों से खराब न होने वाली तथा एक पारदर्शी चादर में परिवर्तित हो सकने तथा भिन्न-भिन्न रूपों में ढाली जा सकने वाली हो। कोई भी प्राकृतिक वस्तु इतने गुणों से भरपूर नहीं पाई जाती।

खिलौने, कपड़े, पाईप, नलों के सामान मोटरों के ढांचे, सामान रखने के डिब्बे, बोतल इत्यादि, टाईल्स, प्लेटें तथा प्याले तो प्रतिदिन प्रयोग होने वाली कुछ ही वस्तुएं है जो प्लास्टिक द्वारा बनती हैं। प्लास्टिक ने लकड़ी, प्राकृतिक धागे, चीनी मिट्टी, कांच तथा कई प्रकार की धातुओं का स्थान बड़ी सरलता से ले लिया है। कभी-कभी तो प्लास्टिक न केवल सस्ता ही होता है अपितु दूसरी वस्तुओं से बढ़िया तथा अधिक गुणों वाला भी माना जाता है। प्लास्टिक को सरलता से भिन्न-भिन्न रूपों में ढाला जा सकता है।

कुछ प्लास्टिक प्राकृतिक होते हैं। जैसे, लाख, जो कीड़ों से प्राप्त होता है। रबर तथा गट्टा परचा हमें पेड़ों से मिलता है। परन्तु साधारणतया हम मनुष्यों द्वारा बनाई वस्तुओं को ही कहते हैं। मनुष्य द्वारा प्लास्टिक...

बन 'लगभग आपके जितनी', महिला गवाह
से उत्तर दिया।

बैं एक पड़ोसी ने मुल्ला नसरुद्दीन से उन
बा गधा एक दिन के लिये मांगा। मुल्लाजी
इन टालने की गरज से कहा, 'भाई, गधा तो
एक दूसरे साहब को उधार दिया हुआ है।'
स्थाने में ही गधा जोर से रेंका, क्योंकि असल
प्ल तो वह मकान के पीछे ही बंधा हुआ था।
कोड़ोसी बहुत नाराज हुआ, 'वाह मुल्लाजी,
है इस उम्र में झूठ बोलते हैं आप! गधा
मसौजूद है और आप कहते हैं कोई उधार ले
फुला कर भी ढांचों में डाला जाता है। आज प्लास्टिक की वस्तुयें हमारे जीवन में एक अत्यन्त उपयोगी स्थान प्राप्त कर चुकी हैं।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

केश : कांटों भरा ताज

इन्दु जैन

यों, हमारे बाल काले करने पर न किसी को आश्चर्य होना चाहिए था, न आपत्ति, क्योंकि बाल हमने सचमुच धूप में सफेद किए थे। बिना अनुभवों की आग में तपे, बिना उम्र का सफर तय करने की थकान झेले, हम शीश पर बेमौसम बर्फ बरसा बैठे थे। जब उत्साह की गर्माहट से बर्फ न पिघली, तो दुनिया का पैगाम सुनाने वाला समाचार पत्र हमारे शीश पर छिड़े काले-गोरे युद्ध का शान्ति-उपाय चुपके से विज्ञापन के माध्यम से सुझा गया।

बात हमने जरा बीच से उठा ली। कहानी शुरू उस सुबह से होती है, जब दर्पण में मुख निहारते हुए एक नन्हीं-सी चमक कनपटी पर कौंध गई थी और हमारा दिल उस तीखे चमकीले भाले पर टंगा रह गया था। सहम कर बालों को टटोला, लेकिन एक रुपहले तार के अलावा मेघ घटाएं ज्यों-की त्यों घिरी थीं। उस अकेले अभिमन्यु को खींचकर निकाल लिया और फूंक मार- [illegible] पर तनिक स्नेह

प्रतियोगिता 26

इनाम 30 रु०

आपको यह बताना है कि यह तस्वीर किस कलाकार की है? और यह क्या दीवानी बात कह रहा है?

रीय उन्हें नहीं रुची, तो झुंझला कर बोलीं, 'हम तो समझे थे कि ये सफेद बाल किसी अनुभव और बुद्धि के परिचायक होंगे, तुमने तो यों ही धूप में बाल सफेद किए।'

दिल पर भाले की फिर वही चुभन महसूस हुई। मौका मिलते ही स्नोव्हाइट कहानी वाली सौतेली मां की तरह जादुई शीशे के सामने सवाल उभरा। वह पूछा करती थी, 'सबसे सुन्दर कौन, क्या मैं?' हम पूछते थे, 'क्या हम बूढ़े?' उसे निर्दय जवाब मिलता था, 'रानी, तुम नहीं, स्नोव्हाइट!' और हमें दिलतोड़ जवाब मिलता था, 'तुम नहीं तुम्हारे बाल!'

दिल बहलाव के लिए हमने अपनी वंशबेलि का गुण—विस्तार प्रारम्भ किया। आर्य मध्य एशिया से आए थे—गौरांग और पीतकेशी। बाद में अनार्यों के संसर्ग से मिश्रित जाति ने जन्म लिया। तो यह हमारा शुद्ध आर्यत्व है, जो अब हमारे शीशे पर फूट रहा है। एक-एक सफेद बाल हाथ में लिए उसे धूप में चारों ओर घुमाकर देखने की कोशिश की। शायद यह रुपहला नहीं सुनहरा है। हार कर मान जाना पड़ा कि बाल सुनहरा नहीं, धूप ही सोनरंगी है। पिता और माता की ओर किसी प्लैटिनम ब्लोण्ड पितामह और पितामही की यथाशक्ति खोज की, जिसका रक्त और पिग्मेंट जोर मार रहा हो, लेकिन सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। मानना ही पड़ गया कि बाल सफेद होते जा रहे हैं।

खैर, खून, खांसी, खुशी की तरह यह रंज भी छुपाए न छुपा। दोस्तों और शुभचिंतकों के अलावा तमाम देशी-विदेशी पत्रिकाओं में सैंकड़ों नुस्खे पढ़ डाले। पढ़े ही नहीं, आजमा भी लिए। योग ने कहा शीर्षासन करो, सिर में रक्तसंचार होने से बालों में शक्ति आती है, गंजापन और सफेदी दूर होती है। नहीं मालूम, यह होता है या नहीं, लेकिन शीर्षासन करने के बाद कमर और गर्दन में मोच जरूर आ जाती है और वे लचकने लगती हैं, इतना मैं शर्तिया कह सकती हूं। दिसम्बर की कोहरे भरी सुबह में आंवले से सिर धोने से नजला हो गया और तब सुनने में आया कि नजला अक्सर बालों पर गिरता है। किसी दक्षिणवासी ने कहा, काफी पियो। काफी का रंग सीधे बालों पर असर करता है। तो एक कश्मीरी मित्र ने कहा, कॉफी को हाथ न लगाना। कॉफी सारा रंग सोख लेती है—बड़ी खुश्क होती है। हाल में न्यूयार्क से निकलने वाली एक मेडीकल पत्रिका में पढ़ा कि अनुसंधान द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि ज्यादा कॉफी गंजापन ले आती है। पढ़कर हमारी गति सांप छछूंदर की-सी हो गई। सिर पर बाल काले-स्याह हों, लेकिन हों कुल जमा तीन, कि नाई भी बीच की मांग निकाल कर पूछे कि तीसरा कहां रखूं? तो क्या बात बनी? दही से बाल धोए, तो बच्चे पास न फटके, मच्छर जरूर। पति दूर ही से कामकाजी बातें करके किस्सा खत्म करें। सर्दी से सिर बचाओ, लेकिन ताजी हवा बालों के जड़ों पर लगने दो। लगा कि बीरबल की तरह सिर पर खाट लिये घूमना होगा। सुबह से रात तक एक ही चर्चा, एक ही फिक्र। खाते-खाते हाथ रुक जायें, सोते-सोते चौंक कर उठ बैठें। इस सबके बीच हरदम लटकिया सुझाव, 'भई, कुछ भी करो, चिन्ता न करो। फिक्र तो बालों का सबसे बड़ा दुश्मन है।' गर्ज यह कि मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की। एक से दो और दो से तीन, पर हम न रुके—रासायनिक खेती की तरह श्वेत क्रांति लहराती ही चली गई।

इस बीच इंगलैंड से भाई भाभी का भेजा एक प्यार भरा पार्सल दरवाजे आ लगा। पार्सल खोला, तो आंखों में खुशी के आंसू छलछला आये। मुसीबत में आखिर अपना खून ही साथ देता है। किसी संवेदनशील मित्र ने मेरी दुविधा की गाथा सात समुन्दर पार प्रेषित कर दी थी और भैया अकुला उठा था। पार्सल में शैक्सपीयरिन भाषा में लिखित गारन्टी के साथ कई रंग की बोतलें थीं, ब्रुश थे और थीं छोटी-छोटी प्यालियां और कई पन्नों का लम्बा-चौड़ा सुझाव-साहित्य, जिसे मैंने इस तरह थामा, जैसे डूबती राजकीय ख्याति ने आर्मेडा का सहारा लिया था। सम्भल-सम्भल कर मैंने साहित्य का पारायण किया और एक-एक कदम सही चलकर, स्टॉप वॉच की मदद से अपने केश रंग डाले। घण्टों बाद जब मैं गुसलखाने से निकली, तब मेरे भीतर थकान और विजय का एक अजीब-सा मिश्रित उल्लास था। उस दिन मैंने जाना कि घमासान युद्ध के बाद सिकन्दर को कैसी अनुभूति होती होगी।

जी, इतिहास की ये उपमाएं मेरे अवचेतन से खुद उभर कर निकली हैं और मैं अवचेतन की भाषा की बहुत कायल हूं। आज फिर एक बार उसकी सच्चाई सिद्ध हो गई। अपूर्ण भारत-विजय के बाद सिकन्दर

लौट लिया था और कलिंग-विजय के बाद चंडाशोक बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोया था—सम्राट से भिक्षु हो गया था।

मेरे सिर पर भी काले बालों का कांटों भरा ताज क्या रखा गया, मुसीबत का बादल उतर कर ठहर गया। सुबह केश-विन्यास किया और शाम को बड़ी बिटिया के स्कूल में पारितोषिक वितरण था। बड़े गर्व से हम वहां गए और बिटिया का विजयोल्लास अपने चारों ओर प्रभामण्डल की तरह लपेटे, उसके प्रिंसिपल से मिले तो वे छूटते ही बोले, 'अरे, आप इसकी माता जी हैं? मैं तो समझा था बहन हैं!' बालों का यह चमत्कार देख हमने अपने पति पर नाज भरी दृष्टि डाली ही थी, कि पास खड़ी बिटिया की भावभंगिमा और तनी हुई मुख-मुद्रा देखकर खून जम गया। उत्साह पिघल गया। वह घर आते ही बरस पड़ी। बोली, 'तुम्हें यह तमाशा करने की क्या जरूरत थी? बालों को क्या कर लिया है तुमने? कितना मजाक उड़ाया होगा मेरी सहेलियों ने! ममी तुम्हें इतना भी नहीं पता कि ग्रेसफुली बड़े कैसे होते हैं!' अपनी बेटी की यह कटु आलोचना सुनकर मैं स्तब्ध रह गई। इतनी कड़वाहट? क्या सच ही मैंने अपना तमाशा बना लिया? आजकल तो सभी बाल रंगते हैं। मैंने ही क्या गुनाह किया?

पति ने मामला बिगड़ते देख हमेशा की तरह रासायनिक की भूमिका अदा की। कुछ बेटी को समझाया, कुछ बेटी की मां को, ...

संजीव कुमार
इण्डिया बैचलर एंसोसियेशन आजीवन मैम्बरशिप ले ले।

गुल खिलाया। पति शाम को दफ्तर से लौटे, तो बहुत खराब मूड में। चाय भी नहीं पी। आते ही बगीचे में खुरपी लेकर जुट गए। बच्चों को डांट दिया। मुझसे नजरें चुराते

मेरे खिलाफ षड्यन्त्र कर रही थी। मैं किसी से मिलती, तो खुद उसके बालों पर नजर जाती। रंगे हुए बाल सख्त और बनावटी अलग पता चल जाते थे। सफेद-काले

...नाम फिल्मों में भारत ...दल गिरगिट कुमार रखना शुरू करे।

जीनत अमान
...गन में तुलसी का पौधा ...?'

...गीत गाऊंगी; परदा गिरेगा। फिर उठेगा, मैं एक नृत्य करूंगी, परदा गिरेगा। तीसरी बार परदा उठेगा, मैं ...पर राग खमाज पेश करूंगी, परदा ...। फिर...

लेकिन इसमें मेरा रोल कहां है?' ...ता ने बात काटते हुए पूछा।

'क्यों? परदा अपने-आप उठेगा-गिरेगा' अभिनेत्री बोली।

मेरे जवान दोस्त; जब आप मेरी उम्र ...
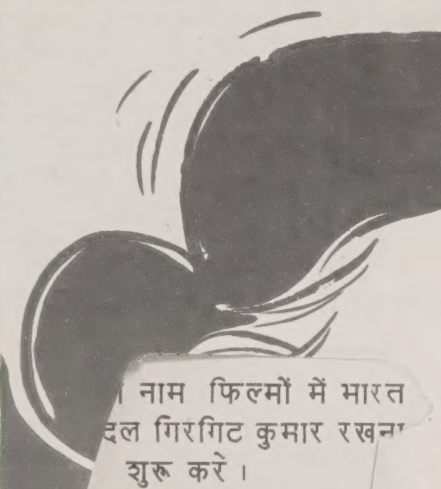
मतलब यह कि एक सज्जन ऑफिस में मेरे पति के पास पहुंचे; यह समझ कर कि मैं उनकी बेटी हूं और अविवाहित हूं—वे विवाह ...

...कॉकटेल पार्टियों में जाने से ...ले उसकी पूजा करे।

...ज्ञान कितना दुखदाई होता है, इंसान को। कितना अकेला कर जाता है! बार-बार पता लग रहा था। मेरी रातें फिर नींद से रिक्त थीं। भूख मर गई थी और भीतर युद्ध छिड़ा रहता था।

'लगभग आपके जितनी', महिला गवाह ...उत्तर दिया।

एक पड़ोसी ने मुल्ला नसरुद्दीन से उन...का गधा एक दिन के लिये मांगा। मुल्लाजी टालने की गरज से कहा, 'भाई, गधा तो ...किसी दूसरे साहब को उधार दिया हुआ है।' ...कहने में ही गधा जोर से रेंका, क्योंकि असल ...तो वह मकान के पीछे ही बंधा हुआ था। पड़ोसी बहुत नाराज हुआ, 'वाह मुल्लाजी, ...इस उम्र में झूठ बोलते हैं आप! गधा मौजूद है और आप कहते हैं कोई उधार ले

संगीत-सभा में नये गायक ने एक राष्ट्रभक्ति का गीत पेश किया। हॉल के कोने में एक व्यक्ति सिसकने लगा। महेश जी ने उस व्यक्ति से पूछा—

'क्या आप राष्ट्रवादी हैं?'
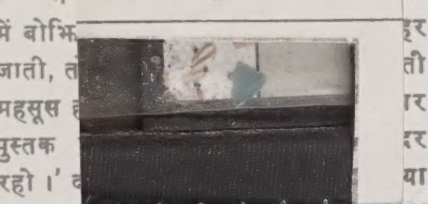
'जी नहीं, मैं एक संगीतकार हूं।' उस व्यक्ति ने जवाब दिया।

●

जीवन के आखिरी वर्षों में बर्नार्ड शॉ को सबसे ज्यादा कोफ्त होती थी उन पत्रकारों से जो बार-बार भेंटवार्ता के लिए उन्हें परेशान करते। एक युवक पत्रकार ने किसी तरह टेलीफोन पर शॉ को पा ही लिया। 'कैसे हैं आप, मि० शॉ?' पत्रकार ने बात-चीत का सिलसिला शुरू किया।

●

महेशजी (फिल्म समीक्षक से): आप ने खुद तो कभी फिल्म बनाई नहीं। फिर आप क्या फिल्म-समीक्षा लिखेंगे?

फिल्म समीक्षक: जनाब, मैं कभी मुर्गी की तरह अंडे नहीं दे सकता, लेकिन आमलेट के बारे में मुर्गी से ज्यादा जानकारी रखता हूं।

फिल्मी हस्तियों से दीवाना का नव वर्ष अनुरोध

हम चाहते हैं कि निम्न फिल्मी व्यक्ति नये वर्ष के यह संकल्प करें—

धर्मेन्द्र

हेमा मालिनी से मिलने जाते समय अपनी बीवी सदा साथ लेकर जाये।

आई० एस० जौहर

अपनी पुरानी बीवियों से सिगरेट-बीड़ी व किराये के ... पैसे फिल्म नसबन्दी की कमाई में से चुका दे।

अमजद खां

अमजद खां अपनी बर्थ डे पर अपने छत पर मय पार्टी के चढ़ कर जोर-जोर से गब्बर सिंह के डायलॉग पड़ोसियों को सुनाये। पार्टी में केवल जैमिनी व रेमन सर्कस के जोकरों को बुलाये।
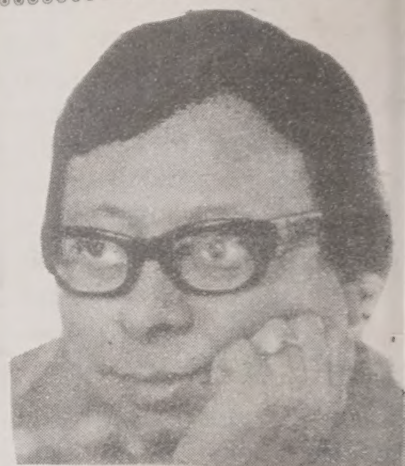
देव आनन्द

फिल्मों के टाइटलों में देव आनन्द अपने नाम के साथ अपनी आयु भी देना शुरू करे।

आर० डी० बर्मन

नये वर्ष से साल में कम से कम एक

गाने की धुन खुद बनायें (वर्ना १००% धुनें पश्चिमी देशों की हू-ब-हू नकल होती हैं।)

राजकपूर

राजकपूर साल में एक छोटी डाक्यूमेंट्री फिल्म बिना नर्गिस लेकर बनाये।

मनोज

अब से अपना नाम फिल्मों में भारत कुमार से बदल गिरगिट कुमार रखना शुरू करें।

...नु

एक बार विनोबा भावे के पास रहे और उनसे मौनव्रत की दीक्षा ले।

संजीव कुमार

इण्डिया बैचलर एंसोसियेशन आजीवन मैम्बरशिप ले ले।

जीनत अमान

अपने आंगन में तुलसी का पौधा लगा

ले और कॉकटेल पार्टियों में जाने से पहले उसकी पूजा करे।
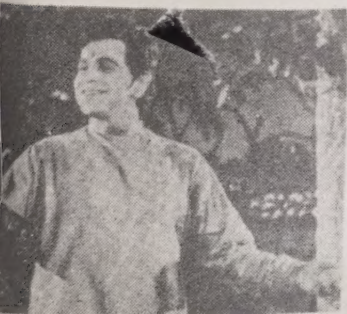
दिलीप कुमार

...त्र C/o सायराबानो के पते पर मंगाये।

प्रेमनाथ

५ रु० पुरस्कार जीतिए

आप सुझाइये कि प्रेमनाथ को नये वर्ष पर क्या दीवाना संकल्प करना चाहिये। दीवाना कार्यालय में हल पहुंचने की अंतिम तिथि १४ जनवरी १९७८।

एक अभिनेत्री और एक अभिनेता की कई फिल्में पिट गईं और उनका सितारा डूबने लगा। दोनों ने तय किया कि वे अपनी 'इमेज' सुधारने के लिए स्टेज पर एक कार्यक्रम पेश करें। अभिनेत्री ने कार्यक्रम की रूपरेखा अभिनेता को बताई—'परदा उठेगा, मैं एक गीत गाऊंगी; परदा गिरेगा। फिर परदा उठेगा, मैं एक नृत्य करूंगी, परदा फिर गिरेगा। तीसरी बार परदा उठेगा, मैं वीणा पर राग खमाज पेश करूंगी, परदा गिरेगा। फिर...

'लेकिन इसमें मेरा रोल कहां है?' अभिनेता ने बात काटते हुए पूछा।

'क्यों? परदा अपने-आप उठेगा-गिरेगा क्या?' अभिनेत्री बोली।

'मेरे जवान दोस्त; जब आप मेरी उम्र के हो जाते हैं तो या तो आप भले-चंगे होते हैं, या मर चुके होते हैं! नमस्ते!' कहकर शॉ ने टैलीफोन बन्द कर दिया।

'तुम्हारी उम्र क्या है?' महिला वकील ने पूछा।

'लगभग आपके जितनी', महिला गवाह ने उत्तर दिया।

एक पड़ोसी ने मुल्ला नसरुद्दीन से उन का गधा एक दिन के लिये मांगा। मुल्लाजी ने टालने की गरज से कहा, 'भाई, गधा तो एक दूसरे साहब को उधार दिया हुआ है।' इतने में ही गधा जोर से रेंका, क्योंकि असल में तो वह मकान के पीछे ही बंधा हुआ था। पड़ोसी बहुत नाराज हुआ, 'वाह मुल्लाजी, इस उम्र में झूठ बोलते हैं आप! गधा मौजूद है और आप कहते हैं कोई उधार ले गया है।'

मुल्लाजी ने ठंडी सांस भरकर कहा, अब ऐसे आदमी से क्या बहस की जाए, जो मेरा नहीं, मेरे गधे का एतबार करता हो।

एक कार में पीछे के शीशे पर लगी चिट: 'ट्राफिक इन्स्पेक्टर कृपया नोट करें कि यह गाड़ी केन्द्रीय सरकार की सम्पत्ति है। सो ट्राफिक सम्बन्धी जुर्मानों के टिकटों की पांच प्रतिलिपियां आवश्यक हैं।'

आपस की बातें

चचा बातूनी

तया स... वर्ष अ...ुरोध

सत्यकाम शर्मा—कानपुर : मेरी आवाज किशोर कुमार जैसी है। क्या मुझे फिल्मों में 'प्लेबैक सिंगर' का चांस मिल सकता है ?

उ० : एक का शोर विविध भारती से बन्द होने पर कितना हंगामा हुआ है। वैसे ही शोर के लिए जोर आजमाने की बजाए आप अपनी कोई अलग आवाज पेश करें तो ज्यादा अच्छा है।

एम० एच० कादरी—बीकानेर : आप पाठकों के ढेर सारे पत्र देख कर घबरा तो नहीं जाते ?

उ० : घबराने की बजाए, जान में जान आ जाती है। पिछले दिनों एक बार हमें हार्ट अटैक हुआ था। आक्सीजन देने की बजाए डाक्टर ने हमारे सामने आपके पत्रों की एक बोरी उलट दी और पत्रों को देखकर हमारा दिल बैठते-बैठते एकदम स्टैंड-अप हो गया।

रमेश चन्द्र अग्रवाल—रोहतक : क्या आपको भूलने की बीमारी है, जो आप मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं देते ?

उ० : प्रश्न का उत्तर तो हाजिर है। फिर भी भूलने की बीमारी भयंकर रूप की है। एक बार जब हम होटल से बाहर निकलने लगे तो वेटर ने कहा, 'साहब आप कुछ भूल रहे हैं' हमने दिमाग पर जोर देते हुए कहा। 'क्या भूल रहे हैं ? टिप तो हमने तुम्हें दे दी है।' इस पर वेटर ने कहा, 'जी हां, पर आप खाना खाना भूल गये हैं।'

सुरेश खुराना—जींद : अगर आप भी हमारी तरह दीवाने बन गए तो हमारे प्रश्नों के उत्तर कौन देगा ?

उ० : हम तो सबसे पहले नम्बर पर २४ कैरेट के दीवाने हैं। इसके साथ ही...
प्रश्न आपके हमारे उत्तर दोनों की भरमार है,
होश नहीं है फिर भी यह दीवाना बहुत
होशियार है।

किशोर नारंग 'प्रेमी'—इन्दौर : चाचा जी, आप अपनी जिन्दगी में क्या-क्या आजमाना चाहते ...

उ० ...

हैं।

क...

फिल्मी व्यक्ति नये वर्ष के यह संव...

रवी... आई० एस० जौहर

आपको सौ साल तक जीवित रहने का नुस्खा चाहिए ?

उ० : जी नहीं, इतने दिनों तक जिन्दगी को संभाले रखना हमारे बस का रोग कहां है। एक बार हमारे एक मित्र ने डाक्टर से सौ साल तक जीवित रहने का तरीका मालूम किया, तो उनके प्रश्न उत्तर इस प्रकार थे :
'सिगरेट पीते हो ?'—'जी नहीं।'
'लाल परी पीते हो ?'—'जी नहीं।'
'क्लबों ... ...ामह और पितामही की
'सिम्मी ... की, जिसका रक्त और ... देखते
हो ?'- रहा हो, लेकिन सारे प्रयत्न
'फिर ... मानना ही पड़ गया कि ... हो ?'
के ...

मौहम्म... सबन्दी की कमाई में से चु... :
नेताओं ... दे। ... याद
रह जा...

सैंकड़ों नुस्खे पढ़ डाले। प...
...मा भी लिए। योग ने कहा :

...षासन करने के बाद कम...
...सोच जरूर आ जाती है।
...लगती हैं, इतना मैं शर्तिय...
...। दिसम्बर की कोहरे भरी...
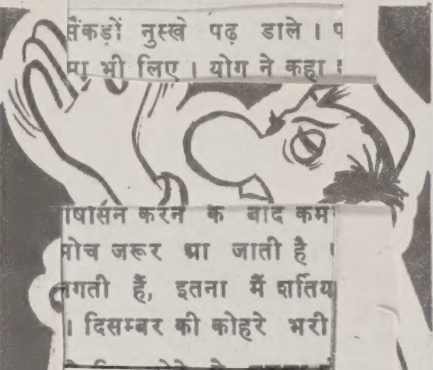
देव आनन्द

उ० : ... पर
रोना ... टाइटलों में देव आनन्द ... कौन सी होती है। बस अपनी डबल रोटी याद रहे, यही काफी है। बीस साल पहले की बात है, एक बहुत बड़े नेता हमारे यहां आकर ठहरे। आज वह उससे भी बड़े लोकप्रिय नेता हैं। उनके पधारने से पहले हमें एक कागज दिया गया जिस पर नेता का भोजन और भोजन करने का समय लिखा हुआ था। सुबह नाश्ते में वह मक्खन टोस्ट और अंडों के सैंडवि... हर के ... मौसमी ... और ... सूप, ... मीने ... प्रब... यह ... — सा... देव... बीमा... समय हम सोच र... जो हमें याद था।

ओमप्रकाश भठेजा—पानीपत : चाचा जी, चिल्ली लीला में सदा सिलबिल-पिलपिल ही क्यों होते हैं ?

उ० : क्योंकि इस ... अधिक मनोरं...

सत... क्या आ... ?

उ... की धुन खुद बनायें (वर्ना तो नग... धुनें पश्चिमी देशों की हू-ब-हू नकल होती हैं।)

नार... जी, ... देंगे ?

उ० : क्या ... हमारे पड़ोसी के लड़के लल्लू जैसा काम शुरू कर दिया है ? परसों ही की बात है, हमें पता चला कि लल्लू ने जूतों का नया-नया काम शुरू किया है। फ्लैक्स, बाटा, बालूजा, इम्पीरियल, जिस कम्पनी के जूते चाहियें वह डिस्पोजल में सस्ते दिलवा देगा। हम जूते खरीदने की बात करने उसके ... गए तो पता चला वह घर पर नहीं है। हमने घर के एक सदस्य से पूछा, फ्लैक्स, बाटा, बालूजा, किस दुकान पर जाने लगा है लल्लू ? इस पर जवाब मिला, यह तो पता नहीं पर आजकल वह मन्दिर जाने लगा है।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२